आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फ ाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

ईश्वर का ध्यान करना चाहिए, पर लक्ष्य बिना ध्यान संभव नहीं है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भी कुछ बाधाओं की चट्टानें है उन चट्टानों को सामने से हटाये बिना ईश्वर प्राप्ति संभव नहीं है। काम-क्रोध-मद-मोह (माया) चार चट्टानें है जो बाधक हैं ईश्वर प्राप्ति के लिए। ईश्वर की प्राप्ति के लिए यदि ध्यान किया जाता है तो इन चट्टानों को तोड़ना होगा, वरना मन भटकता ही रहेगा।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

बुद्धे परिनिव्वुडे चरे, गामगए नगरे व संजाए।

सन्तिमग्गं च बूहए, समयं गोयम ! मा पमायए॥

तू गांव में या नगर में संयत, बुद्ध और उपशांत होकर विचरण कर, शान्ति-मार्ग पर बढ़। हे जीव ! क्षण मात्र के लिये भी प्रमाद मत कर।

- उत्तरा. सूत्र, 10.36

पाथेय ***हे स्वामी ! हम तुम्हारी सेवा में उपस्थित है, जिससे तुम्हारी इच्छा कार्यान्वित कर पूर्ण कर सकें। हमारे विचारों से समस्त बाधक तत्वों को दूर कर दो, और सब प्रकार की शंकाओं, दुर्बलताओं एवं संकीर्णताओं से हमें मुक्त करो उन आवरणों को हटा दो जिन्होंने ढक रखा है हमारा ज्ञान एवं हमारी समझ की तीक्ष्णता को कर दिया है धूमिल। प्रभु मैं तुम्हारी पूर्ण चेतना एवं एकत्व पाने का अभिलासी हूं वह भी निष्क्रिय होकर नहीं, अथवा भौतिक जीवन से पलायन द्वारा नहीं वरन् तुम्हारे संकल्प की सर्वागीण एवं अखण्ड संसिद्धि हेतु। मैं तुम्हारी महान सत्ता से चाहता हूं संयुक्त होना। नाथ ! जिस घने अन्धकार ने पृथ्वी को ढक रखा है उसको विदीर्ण कर फूटने दो अपने परम प्रकाश की किरणें।***

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 माघ-फाल्गुन फरवरी 2023 अंक-2

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- धर्म-संस्कार और संस्कृति- (सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- दस आश्चर्यजनक घटनाओं वाला हुण्डा अवसर्पिणी काल- शांतिलाल सगरावत	6
5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा.,शिष्टाचार	7-9
6- Let Us Understand The Reason-सा. मुक्तिप्रियाश्रीजी चिंतन व्यापक हो, सत्ता सीमित हो....	10
7- विनय दर्शन, नवकार का जाप क्यों करें ?	11-12
8- लघुमति- पंन्यास श्री चन्द्रशेखर विजयजी म., मिथ्यात्व जाने पर....	13-14
9- दृढ़प्रहारी मुनि की कथा- मुनिश्री जयानन्दविजयजी म. समता	15-16
10-जिन शासन ऐसे ही महान नहीं है जैन जगत को रोशन करने वाले आचार्य भगवंत	17
11-यह गलत फहमी है कि रुपये हमारे है !, गोचरी, मन का मंदिर	18
12-संस्कृति-प्रदूषक तत्वों से सावधान रहे, डॉ. अनुपम, चार माता	19-20
13-प्रश्न का समाधान - प्रवर्तक कुन्द न ऋषि, धन से विरक्ति, विश्वविद्यालय	21-22
14-सफल कौन ? सबसे बड़ी गलती	23-24
15-**THE HINDU Newspaper** के वरिष्ठ पत्रकार वाय. नटराजन के जैनियों के बारे में लेख का हिंदी भावानुवाद	25
16-तस्वीर दिल्ली के टैक्सी चालक देवेन्द्र की है- मोबाईल से	26
17-वर्गपहेली- 333 - जयंतीलाल जैन, सच्चा स्वरुप	27
18-ज्ञान गंगोत्री- 333-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. संकट में कूद पड़े, परिवर्तन प्रगति का सूचक है	28
19-शासन-समाचार	29-39
20-देवांशी संघवी के जीवन का अद्भूत सफर बाल साध्वी श्रीप्रज्ञाश्रीजी तक, 102 वर्ष प्राचीन श्रीशांतिनाथ प्रभु से सुशोभित हुबली में 10 मुमुक्षुओं की ''वैराग्य यात्रा''	40-41
21-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक,दृष्टिकोण बदलें....	42

नमस्कार की व्यापकता- *नमना सीमित नहीं होता, सदा व्यापक होता है। वह क्षेत्र, समय या व्यक्ति की सीमा में नहीं बंधता है। इसका प्रमाण है नमस्कार मंत्र। इसमें किसी क्षेत्र, समय या व्यक्ति विशेष की महानता को ही नमस्कार नहीं किया गया है, बल्कि तद्नुसार गुणधारक सभी अनाम महान आत्माओं को नमस्कार किया गया है यहां तक कि पांचवें पद में किसी विशेष मत या समुदाय के साधु को नहीं बल्कि साधुत्व की गुण-सम्पननचा वाले संपूर्ण लोक के सभी साधुओं को नमस्कार किया गया है। यही नमस्कार की गुणवत्ता और गुणानुसार व्यापकता है। नमस्कार में न गुण-भेद किया जाता है और न संकोच।*

संपादकीय

धर्म-संस्कार और संस्कृति

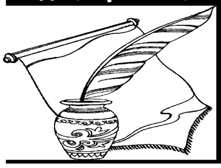

यदि *सही अर्थों में केवल एक पंक्ति में हमारी संस्कृति की परिभाषा पूछी जाये तो वह इस प्रकार होगी-* ***''यह देवमानव गढ़ने की व्यवस्था का नाम है''*** *हमारी संस्कृति की यही वैशिष्ट्यपूर्ण समृद्धि उसे अन्यन्य सभ्यताओं और संस्कृति के नाम से चल रही नाना प्रकार की विधि व्यवस्थाओं से ऊपर व श्रेष्ठतम ठहराती है। दुर्भाग्यवंश संस्कृति का अर्थ आज कला, नृत्य, पुरातन विज्ञान, वेशभूषा, रहन सहन, विवेक की दृष्टि से अप्रासंगिक रीति-रिवाजों तक सीमित कर दिया गया है जबकि संस्कृति समग्र अध्यात्म के दर्शन तथा व्यवहार पक्ष से भी बड़ा विस्तार लिए एक ऐसी प्रक्रिया जो व्यक्ति, परिवार, समाज के नवनिर्माण की बात करती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि संस्कृति का समग्र परिचय कराने के लिए देश भर में* ***''संस्कार महोत्सव''*** *के आयोजन किये जाये जिसके माध्यम से संस्कृति के व्यावहारिक स्वरुप का परिचय प्रदर्शित करने के साथ धर्मतंत्र के प्रशिक्षण को भी सम्मिलित किया जाये जिससे कुसंस्कारों को परिष्कृत किया जा सके।*

मानव को सृष्टा की सर्वोत्कृष्ट कृति माना जाता है इस नाते सम्पूर्ण प्राणी जगत में उसे एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है वरिष्ठता का जो पद मानव को प्राप्त है वह उसे मानसिक-शारीरिक कौशल के कारण नहीं मिला है, यह पद उसे उत्कृष्टता के कारण मिला है, जिसे सुसंस्कारिता के नाम से जाना जाता है, उसे संस्कार देने में वातावरण भी मददगार बनता है तथा धर्म अध्यात्म के माध्यम से बनाया गया वह अद्‌भूत तंत्र भी है, जो जीवनयात्रा के महत्वपूर्ण मोड़ों पर संस्कारों को समाविष्ट करने की व्यवस्था करता है और जब इस व्यवस्था में अवरोध उत्पन्न होता है तो कुसंस्कारी समुदाय के बहुल्य के कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास होने से आस्था का संकट की विपत्ति खड़ी हो जाती है, हमारे यहां ऐसे भी जीवधारी है, निकृष्ट होने के साथ भाव संवेदना की दृष्टि से शून्य है उन्हें भ्रष्ट चिंतन एवं दुष्ट आचरण में ही रास आता है, इन्हें कर्त्तव्यों का ज्ञान नहीं एवं मानवी गरिमा के अनुकूल जीना अनुशासित स्थिति में रह पाना उन्हें रास नहीं आता है, इनकी कुसंस्कारिता का कारण शायद उत्कृष्ट वातावरण का अभाव होना हो सकता है, आज देश में घटित घटनाओं की समीक्षा इन्हीं तथ्यों के संदर्भ में की जानी चाहिए।

कुसंस्कारों से मुक्ति और सुसंस्कारिता के उपार्जन हेतु मनुष्य रुपी भटके हुए देवता को मार्ग या लाने के लिये एक राजमार्ग हमारी संस्कृति के निर्धारकों, मनीषियों द्वारा बतलाया गया है, व ह है धर्मतंत्र के माध्यम से लोक शिक्षण। भाषा, व्यवहार, आहार, रहन-सहन, आचार गुण, कर्म आदि बच्चे बड़ों से सीखते है, इसी प्रकार चिंतन चारित्र रुचि आदि भी वरिष्ठों के द्वारा दिया जाना ही चाहिये। यह वरिष्ठ मार्गदर्शन ही धर्मतंत्र को मजबूती प्रदान करता है, धर्मतंत्र के अंतर्गत स्वाध्याय, सत्संग व्यवस्था के साथ गुरुकुल, पाठशाला का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शासन तंत्र और धर्म तंत्र की तुलना करने पर प्रतीत होता है कि - शासन का प्रभाव मात्र भौतिक क्षेत्र पर होता है जबकि धर्मतंत्र का व्यक्तित्व के गहन क्षेत्र, मन में प्रवेश करके भावश्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा और आदर्श कर्म निष्ठा को उभार कर मनुष्य में देवत्व का उदय करता है। राजतंत्र में श्रद्धा जगाने तथा संयमी उदार जीवन की प्रेरणा देनेवालों का अभाव होता है, जबकि धर्म इन्हीं देवी सम्पदा से लबालब भरा हुआ है, आज धर्म के नाम पर जो चल रहा है क्रिया-कृत्यों को मात्र ढकोसला मानकर उसकी गलत प्रस्तुति की जा रही है उसकी भर्त्सना करते हुए यह ज्ञात करवाना जरुरी है कि -धर्म का वास्तविक स्वरुप क्या है ? वस्तुतः यह समाज को मर्यादा में बांधनेवाला तथा चिंतन और चारित्र में उत्कृष्टता भर देने वाला प्रचण्ड अनुशासन है।

इस अनुशासन के समक्ष न अनीति ठहरती है और नहीं उद्दण्ड आततायी उच्छंखलता। हमारी संस्कृति में सबसे बड़ी सेवा एवं सबसे महान स्थापना धर्मतंत्र ही है, धर्म को व्यवसाईयों के हाथों से निकालकर उसका शास्त्र और विज्ञान सम्मत रुप लोगों तक पहुंचाया होगा, ***'संस्कार महोत्सव''*** *के माध्यम से संस्कार, परम्परा, का पुर्नजागरण होगा तो तीर्थों और देवालयों के प्रति सोयी श्रद्धा के भाव जाग्रत हो जायेंगे।*

धर्म संस्कार और संस्कृति के द्वारा हम लोक कल्याण और आत्म कल्याण को सिद्ध कर अनैतिकता कुप्रचलन को रोकने में सहायक बने यही अभिलाषा!

-डॉ.सुभाष जैन

दस आश्चर्यजनक घटनाओं वाला हुण्डा अवसर्पिणी काल

✻ शांतिलाल सगरावत, मंदसौर

अवसर्पिणी काल में दस आश्चर्यजनक घटनाएँ हुई इसलिये इसे हुण्डा अवसर्पिणी काल कहते हैं। अनन्तकाल के बाद होने वाली अनहोनी घटनाओं को ही आश्चर्य या अचम्भा माना जाता है । ऐसी आश्चर्यजनक घटनाएं उपसर्पिणी काल में नहीं होती । वैसे ही जो कार्य अनादि नियम या सिद्धांत के विरुद्ध हो जाए, उसे लोकोत्तरिक दृष्टि से अच्छेरा या आश्चर्यकारी घटना माना जाता है।

उवसग्ग गब्भहरणं, इत्थीतिथ्यं अभाविया परिसा,
कण्हस्स अवर कंका, उत्तरण चंद सुराणं ।।1।।
हरिवंस कुलप्पती, चमरुप्पातोय अट्ठसय सिद्धा,
असंजएसुपूआ, दसवि अणंतेण कालेणं ।। 2 ।।
- आगमगाथा

1- उपसर्ग आश्चर्य:- भगवान श्रीमहावीर के समवसरण में गोशालक ने तेजोलेश्या छोड़ी । भगवान को भी यत्किंचित्त उपसर्ग हुआ। यह ऐसी घटना अनंतकाल के बाद होने से लोक में आश्चर्यचकित करनेवाली हुई।

2- गर्भहरण आश्चर्य:- इन्द्र की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वयं हरिगैसमेषी देव ने आश्विन कृष्णा त्रायोदसी की मध्य रात्रि में देवानंद ब्राह्मणी की कुक्षी से हरण कर सुखपूर्वक भगवान को त्रिशला महारानी की कुक्षी स्थापित कर दिया। इस प्रकार यह गर्भहरण की आश्चर्यकारी घटना घटित हुई। इसका वर्णन आचरांग सूत्र के 24 वें अध्याय में है।

3- स्त्री तीर्थ रुप आश्चर्य:- तीर्थकर कभी स्त्री नहीं होकर पुरुष ही होते है, किन्तु अवसर्पिणीकाल के 19 वें तीर्थकर श्री मल्लिनाथजी स्त्री रुप में पूर्वकृत कर्मोदय से तीर्थकर हुए। इसका वर्णन ज्ञाता धर्म कथांग सूत्र के 8 वें अध्याय में वर्णित है।

4- अभाविता परिषद घटना आश्चर्य:- भगवान श्रीमहावीर स्वामी के नंभिक ग्राम के बाहर रचित समवसरण में बैठे देव-देवियों को धर्मोपदेश दिया लेकिन किसी भी श्रोता के चरित्र धर्म ग्रहण न करने से तीर्थ की स्थापना न होने से विरति ग्रहण के अयोग्य परिषद जो अभाविता परिषद कहलाती है कि यह घटना अभावित परिषद रुप आश्चर्यकारी घटना के रुप में जानी जाती है। यह ठाणांग सूत्र में वर्णित है।

5- कृष्ण का अपरकंका गमन आश्चर्य:- जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र के नवमें वासुदेव श्रीकृष्ण पाण्डव पत्नी द्रोपदी को छुड़ाने अपरंकका नगरी के राजा को पराजित कर वापिस होते हुए शंखनाद किया जिससे कृष्ण और कपिल वासुदेव का मिलन हुआ, जबकि दो वासुदेवों का मिलन नहीं होता है और वे एक दूसरे की भूमि/क्षेत्र में कभी जाते भी नहीं। यह आश्चर्य भगवान अरिष्टनेमिजी के समय में घटित हुई, इसका वर्णन ज्ञाता धर्म कथांग सूत्र के 16 वें अध्ययन में मिलता है।

6- चन्द्र-सूर्यानतरण नामक आश्चर्य:- कोशम्बी नगरी में विराजित भगवान श्रीमहावीर स्वामी ने समवसरण में चन्द्र और सूर्य का वैक्रिय शरीर के स्थान पर भवधरणीय शरीर में दर्शनार्थ आना भी आश्चर्यकारी घटना थी, इसका वर्णन स्थानांग सूत्र में संक्षेप में मिलता है।

7- हरिवंश कुल उत्पत्ति की आश्चर्यकारी घटना:- हरिवंश क्षेत्र में युगलिक मनुष्य रहते हैं । भरत क्षेत्र की चम्पानगरी का राजा इक्ष्वाकुवंशीय चन्द्रकांता राजा निसंतान काल कवलित हो गया। देवआकाश में स्थित होकर कहने लगे- हे प्रजाजनों में हरिवंश क्षेत्र में हरि और हरिणी नामक जोड़ा लाया हूं। तुम इसे राजा बनाओ। पुण्यानुभाव से हरि राजा बना और युगलिये का कर्म भूमि में राज करना और वंश चलाना वर्जित होने के बाद भी यह सब कुछ हुआ । जो सातवीं आश्चर्यकारी घटना थी। इसका वर्णन स्थानांग सूत्र की वृत्ति में मिलता है।

8- चमरेन्द्र का उत्पात नामक आश्चर्यकारी घटना:- चमरेन्द्र सामर्थ्य होते हुए भी कभी सौधर्म देवलोक में नहीं गया न जायेगा किन्तु भगवान श्रीमहावीर के छद्मास्था वस्था में चमरेन्द्र के सौधर्म देवलोक में जाने की आश्चर्य घटना घटी। इसका विस्तृत विवरण भगवती सूत्र के तीसरे शतक में मिलता है।

9- एक समय में 108 सिद्ध होने की आश्चर्य जनक घटना:- इस अवसर्पिणीकाल के तीसरे आरे में 500 धनुष की अवगाहना वाले 108 सिद्ध हुए, जबकि 2 से ज्यादा सिद्ध उत्कृष्ट अवगाहना वाले नहीं हो सकने से यह हुआ इसलिये यह आश्चर्यकारी घटना घटी। स्थानांग में वर्णन है।

10- असंयतों की पूजा की आश्चर्यजनक घटना:- सामान्यतः तभी तीर्थकरों के काल में संयत पूजा होने की परम्परा है किन्तु तीर्थ के उच्छेद होने से 9 से 16 वें तीर्थंकरों के शासनकाल में नहीं होनेवाली असंयत पूजा हुई। जो आश्चर्यजनक घटना है। इसका वर्णन स्थानांग सूत्र में संक्षिप्त में है।

पाप की सजा भारी...!

***प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.**

गतांक से आगे...!

प.पू.त्रिकालज्ञानी त्रिलोकीश त्रिलोकपूज्य त्रिलोकाग्र निवासी त्रिलोकनाथ चरम तीर्थपति श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी के चरणरविंद में नमस्कार पूर्वक...!

सोच्चा जाणइ कल्याणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयंपि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ।।

- श्री दशवैकालिक आगम में अनन्त उपकारी भगवंत ने फरमाया है कि- हे जीव ! कल्याण का मार्ग भी अच्छी तरह सोच समझकर जान लेना, और उसी तरह पाप का मार्ग भी अच्छी तरह सोच समझकर जान लेना, और फिर दोनों को ही अच्छी तरह सोच-समझकर जान लेने के बाद जो श्रेयस्कर-कल्याणकारी मार्ग हो उसे अपनाना, आचरना। उसी का सम्यग् आचरण करना। उसी में तेरा कल्याण का मार्ग भी शुद्धरुप जो है, जैसा है, वैसा बता दिया है अब इन दोनों को अच्छी तरह समझकर अब कौन सा आचरना ? यह हमारे उपर छोड़ा है। इसका निर्णय हम करें कि दो प्रकार के मार्ग है- अतः किस मार्ग पर जाएं ?

दो मार्ग:- संसार में दो प्रकार के मार्ग है और दोनों ही दो भिन्न-भिन्न दिशा में जाते हैं। एक मार्ग तो है जो सीधा मोक्ष की तरफ जाता है। सीधा और सरल मार्ग है। सिर्फ 14 ही सोपान (गुणस्थान) है। आसान है। साध्य है और सर्व लोक के ऊपर मुकुट स्थानरुप जो मोक्ष है। वहां पहुंचाता है। जबकि दूसरा मार्ग दो प्रकार का है। एक तो सीधा ऊपर का उल्टा जो सीधे अधोलोक में नीचे नरक में ले जाता है और वहां भी करोड़ें-अबजों-खरबों-सागरोपम-काल तक वहां आत्मा को रखता है। बड़ा ही दुःखदायी-वेदना-पीड़ा से भरा हुआ जीवन वहां है। दुःखमय जीवन है। हाय-हाय करते हुए आंखों से निरंतर आंसु की धारा तो क्या परन्तु खून की धारा बहाते हुए, रोते-चिल्लाते हुए मानों सागरोपमों का काल पसार करना है, कांटों से भरा हुआ रास्ता है। कंकर-पथरीला मार्ग है।

दूसरा एक मार्ग है जो पहाड़ियों-घाटीयों में गोल-गोल घूमता है। ऊपर से नीचे और फिर ऊपर से नीचे इस तरह चढ़-उतर करते ही जाओ। चढ़ते ही जाओ। थोड़ी देर के लिए ऐसा लगता है मानो हम ऊपर चढ़ रहे है। काफी ऊपर जा रहे हैं परन्तु यह थोड़ी देर के लिए ही है। फिर वापिस नीचे ही उतरने का आता है। यह मार्ग अत्यन्त जटिल है। इसमें अंतिम किनारा नहीं दिखता है और गोल-गोल घूमाता ही जाता है। चारों गति में परिभ्रमण कराता है।

उपरोक्त बनाए गए दोनों प्रकार के मार्ग को अच्छी तरह पहचानना आवश्यक है। चूंकि मनुष्य मार्ग के अनुसार चलता है। मार्ग जिस दिशा में जाता है उसी दिशा में हम भी जाते हैं। अतः जाने के पहले मार्ग और दिशा का निर्णय पहले कर लेना चाहिये।

पाप और कल्याण का मार्ग:-

पाप का मार्ग कांटो का मार्ग है। दुःखदायी मार्ग है। यद्यपि कुछ प्रारंभिक क्षणों के लिए ऐसा अच्छा और मीठा सुखदायी लगता भी होगा लेकिन अन्त में महा दुःखदायी है। इसमें कोई शंका नहीं है। पाप का मार्ग क्षणिक होता है। थोड़ी देर के लिए पाप की प्रवृत्ति होती है। लेकिन सजा का काल बहुत ज्यादा लम्बा चौड़ा है। एक मिनिट में किए हुए पाप की सजा संभव है हजारों लाखों वर्षों तक भोगनी पड़ती है। यहां पर जैसे किसी को चोरी करते हुए मुश्किल से 1-2 घंटा लगता होगा, बलात्कार किसी पर करने में शायद 10-20 मिनिट लगती होगी लेकिन पकड़ा जाय और सजा जब दी जाती है तब कितनी ? 10 वर्ष की जेल, 20 वर्ष की जेल, शायद उम्र कैद की सजा भी दी जाती है। किसी देशों में तो बलात्कार 10-20 मिनिट की पाप-प्रवृत्ति की सजा फांसी भी दी जाती है। सीधे ही फांसी पर लटकाया जाता है। अब सोचिए क्यों ? पाप की सजा के समय-पाप करते कितना टाइम लगा ? 10-20 मिनिट, या 1-2 घंटा इत्यादि ये कोई नहीं देखता है। सजा देते समय जज समय नहीं देखता है। वह पाप का प्रकार देखता है। कैसा पाप किया है। किस प्रकार किया है। किसने किया है क्यों किया है। इस पाप में इसने कितनों को नुकसान किया है ? इत्यादि कई बातों का विचार करके फिर पाप की सजा दी जाती है। किसी भी स्वरुप में देखा जाय पाप का मार्ग जरुर दुःखदायी है। यह निर्विवाद है।

जिस पिता ने यह कांटों से भरा दुःखदायी मार्ग देखा है, अनुभव किया है उस मार्ग को अपने पुत्र को कौन दिखाएगा ? हितेषी पिता तो वह होगा जो स्वयं पाप का दुःखदायी मार्ग देखकर पुत्र को कहे कि- बेटा इस मार्ग पर मत जाना। यह मेरा अनुभव है। मैंने कई पाप किये है और बड़ा

दुःखी हुआ हूं। अतः मेरी तरह तेरी तेरी जिंदगी भी दुःखी न हो जाय इसलिए ध्यान रखना। समझदार वही है जो दीर्घदर्शी है। बहुत विचार करके दूर लम्बा देखकर चले। अपने हाथ में फ्लेश या टार्च लाईट रखकर दूर प्रकाश फेंककर खड्डा आदि तो नहीं है ? यह देखकर चले तो ज्यादा समझदार है। अंधेरे में रात को चलनेवाली गाड़ियां अपना प्रकाश चार सौ-पांच सौ फीट लम्बे फेंककर आगे का रास्ता पहले देखकर फिर उसके अनुसार चलाते हैं। उसी तरह हमको भी दीर्घदर्शी बनकर, विषय का विचार करके प्रवृत्ति करनी चाहिये। आज मैं यह पाप कर रहा हूं लेकिन भविष्य में मुझे कैसे दुःख सहन करने पड़ेंगे ? आज तो पाप करते समय अच्छे लग जाते लेकिन वे दुःख के दिन या सजा भुगतने के दिन आएंगे तब क्या करेंगे ? हंसते-हंसते किये हुए पाप रोते-रोते जब भुगतने पड़ेंगे तब क्या होगा ? वर्षों तक पाप की सजा भुगतनी पड़ेगी तब क्या होगा ? इसलिए पाप करने के पहले पाप के परिणामों का भी विचार कर लेना चाहिये। तो संभव है आए हुए पाप को न करने का संकल्प भी कर सको।

कल्याण का मार्ग भी प्रभु ने बताया है। पाप का मार्ग जब सर्वथा त्याज्य है, हेय है तो उसके सामने कल्याण का मार्ग ज्ञेय है, उपादेय है, आचरणीय है। कल्याणकारी है। सुखदायी है। अतः पाप के विकल्प के रुप में यह मार्ग आचरना सही है। जिस मार्ग में उत्तरोत्तर आगे प्रगति है, विकास है। शुद्धि-अशुद्धि है। भव-परंपरा का संसार कम होता जाता है, कर्मो का प्रमाण भी कम होता जाता है। अतः आत्म कल्याण का मार्ग अपनाना चाहिये। जिसका सुंदर-सुव्यवस्थित स्वरुप सर्वज्ञ भगवंतों बताया है। निगोद से लेकर मोक्ष तक का सुंदर स्वरुप बताया है। गुणस्थानों पर चढ़ने का 14 गुणस्थान का विकासवाद का उत्तम मार्ग बताया है। अतः किस मार्ग पर जाना है यह निर्णय हमें स्वयं करना चाहिए। थोड़े नीचे दृष्टांत देखिए ताकि आपको विश्वास हो कि कैसे पाप करने से किसको कैसी सजा भुगतनी पड़ी?

किये हुए पापों की सजा:- जैसे पाप करने से जो कर्म बंधते है उनके उदय में आने पर उन दुःखों को, उस सजा को भुगतनी ही पड़ती है। राजा हो या रंक, चाहे तीर्थंकर का जीव हो या चाहे सामान्य जीव हो। किसी के लिए कम-ज्यादा कुछ भी नहीं है। कोई यहां बड़ा-छोटा नहीं है। कर्मसत्ता के घर में तो फिर हुए पापों के अनुसार सजा जीव खुद ही पाता है। उदाहरणार्थ कुछ दृष्टांत संक्षेप में देखें:-

1- भगवान श्रीऋषभदेव के जीव ने अपने पूर्व भव में किसी बैल के मुंह पर शिंका बांधने की सलाह दी और किसान ने वैसा ही किया। इस पाप कर्म की सजा उन्हें 13 वें जन्म में मिली। जब श्रीऋषभदेव ने दीक्षा ली तब वह अंतराय कर्म उदय में आया और उन्हें 400 दिन तक आहार-पानी न मिला।

2- मरीचि के तीसरे जन्म में श्रीमहावीर स्वामी के जीव ने जो कुल मद करके नीच गौत्र कर्म बांधा वह उदय में आया और 5 वां-6-8, 10, 12, 14 वां इतने 6 भव तो ब्राह्मण के याचक कुल में फेंक दिया और वहां पुनः त्रिदंडी होते ही गए तथा 82 दिन का शेष बचा था उस कर्म ने अंतिम 27 वें भव में देवानंदा की कुक्षी में 82 दिन के लिए फेंक दिया जिस तरह कर्म बांधा था उसी तरह कर्म ने अपनी सजा दे दी।

3- 18 वें, त्रिपृष्ठ वासुदेव के जन्म में शय्यापालकों के कानों में गरम-गरम तपता हुआ शीशा डलाकर जो पाप किया था उसका फल उन्हें 27 वें जन्म में भुगतना पड़ा, जहां कान में खीले ठोके गए और जो सिंह को फाड़कर मारना आदि कई पाप किये थे अतः उन पापों की सजा भुगतने के लिए सातवीं नरक में जाना पड़ा।

4- मगध के सम्राट श्रेणिक जैसे राजा ने गर्भिणि हरिणी का शिकार करके दो जीवों का वध करके प्राणातिपात का जो भयंकर पाप किया था उसकी सजा भुगतने के लिए उन्हें पहली नरक में जाना पड़ा। वहां वे 84 हजार वर्ष तक महा वेदना सहन करेंगे। यद्यपि तीर्थंकर नाम कर्म बाद में बांधा था। फिर भी किये हुए पाप कहां छूट सकते है। इसलिए तो नियम है कि- **''कृतं कर्म अवश्यमेव भोक्तव्यं कल्पकोटि शतैरपि''** चाहे करोड़ों वर्ष बीत भी जाय तो भी किये हुए निकाचित कर्म तो अवश्य ही भुगतने पड़ते है। अब 84 हजार वर्ष नरक के पूरे करके वहां से निकलकर यहां पर भरत क्षेत्र में आकर तीर्थंकर बनेंगे।

5- मुनि मराराज के विहार में चलते समय पैरों के नीचे मेंढक आ गया। एक जीव की हिंसा हो गई। फिर भी पाप की क्षमापना न की और उपर से शिष्य को डंडा लेकर मारने दौड़-परिणाम यह आया रात्रि को अंधेरे में खांभे से टकराए, सिर फूट गया और भयंकर क्रोध में मरकर तापस बनकर तिर्यंच गति में चंडकौशिक नामक सांप बने ! जीवों को कई पापों की सजा भुगतने के लिए तिर्यंच पशु-पक्षी की गति भी लेनी पड़ती है।

6- सुभुम चक्रवती अतिलोभ में मरकर7 वीं नरक में गया !

7- कोणिक राजा ने अपने पिता सम्राट श्रेणिक को जेल में डालकर कोड़े मारे। पिता को मारने के भयंकर पाप और भी कई पापों के परिणाम स्वरुप 7 वीं नरक में जाना पड़ा ?

8- ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने कई ब्राह्मणों की आंखों फोड़ा-कर रोज मसलने का जो महापाप किया और निःब्रह्मों पृथ्वी करने का जो हिंसा का पाप किया जिसके फलस्वरुप सातवीं नरक में जाना पड़ा।

9- राजकुमारी के जन्म में पोपट के पंख काटने का जो पाप किया था उसकी सजा ऐसी सामने आई कि पोपट का जीव शंख राजा बना, और राजकुमारी रानी कलावती बनी तब शंख राजा ने रानी के दोनों हाथ कटवाए। Tit For Tat -**''शठ-प्रतिशाठयं''** जैसे को तैसा का नियम कर्म सत्ता के घर में व्यवस्थित चलता है।

10-वेगवती ने मुनि महात्मा पर जो कलंक लगाया था अतः इस13 वें अभ्याख्यान पाप की सजा ऐसी भुगतनी पड़ी की महासती सीता के जन्म में धोबी की सामान्य बात के निमित्त पर राजा रामचंद्रजी ने सीता को निकाल दी। गर्भवती सीता को घर-परिवार सब छोड़कर निकाल जाना पड़ा और जंगल में आश्रम में लव-कुश को जन्म लेना पड़ा। पाप ने अपना काम समय पर ही किया है।

11-साध्वीजी का मन हीरे में रह गया। अति मोह था। अतः मरकर वहीं उपाश्रय में छिपकली बनकर भटकना पड़ा।

12- नंदमणिकार सेठ के जन्म में चौविहारे अट्ठम में रात्रि को पानी पीने में मन गया। आर्तध्यान में आयुष्य बांधा और मरकर बावड़ी में मेंढक बनना पड़ा।

13- कमठ ने प्रथम (भद) में वैर-वैमनस्य का नियाणा बांध कर अपने सगे भाई मरुभुति को मारा भी सही और भविष्य में मारता ही रहूंगा। इस वृत्ति से मनुष्य हत्या और मुनि हत्या के पाप को करके बार-बार कई बार नरक में जाता ही रहा।

14-अग्निशर्मा और गुणसेन के समरादित्य चरित्र में क्या हुआ ? अग्निशर्मा ने गुणसेन को मारने का जो भवो-भव का नियाणा किया था। उसके परिणाम स्वरुप वह मारता ही जाता था और ऐसी मनुष्य हत्या तथा मुनि हत्या के पापों को सजा भुगतने के बार-बार एक एक से भारी सजा भोगने के लिये नरक में जाता ही रहता था।

15- देरानी जेठानी के संबंध में भगवान की प्रतिमा भी कचरे में फेंककर सताने का जो पाप किया उसके फल स्वरुप महासती अंजना को 12 वर्ष पति का वियोग सहना पड़ा। जिस तरह से पाप किये हैं उसी तरह से समय आने पर उन पापों की सजा भुगतनी ही पड़ती है। भगवान श्रीमहावीर स्वामी ने अपनी अंतिम देशना में उत्तराध्ययन सूत्र के कम्मपयड़ी अध्ययन में ये शब्द कहे है कि-**''कड़ाण कम्माण न मोक्खोत्ति''** किये हुए कर्मो से कोई छुटकारा नहीं है। अर्थात् जिस तरह जो पाप किये है और जैसे कर्म बांधे है उनसे कोई छुटकारा नहीं हो सकता है। बचकर कहां भागोगे। आखिर तो पाप की सजा भुगतनी ही पड़ेगी। इसमें अंश मात्र भी शंका को स्थान नहीं है।

यदुपात्तमन्य जन्मनि शुभमशुभं वा स्वकर्म परिणत्या।
तच्छक्यमन्यथा नैव कर्तु देवासुरैरपि हि॥

अपनी कर्म परिणति या पाप वृत्ति से गत जन्मों में जो भी कुछ अच्छा-खराब पुण्य या पाप कर्म जो भी उपार्जन किया है उसे देवता या असुर सभी मिल कर अन्यथा नहीं कर सकते हैं। वो तो जो किया है, जैसा किया है वैसा फल, वैसी सजा भोगनी ही पड़ेगी। **(आगे और भी है...!)**

शिष्टाचार

शिष्टाचार का अर्थ है व्यक्तियों का आचरण। बालक अपने से बड़ों के आचरण देखकर सीखता है। उसका उठना, बैठना, चलना सब क्रियाएं बड़ों को देखकर होती हैं। यदि वह बीड़ी पीने लगता है तो उसमें अपराध बड़ों का है। बड़ों को ध्यान में रखना चाहिये कि मैं कैसे चलता हूं, कैसे बोलता हूं, बैठता हूं। इसके अतिरिक्त शिष्टाचार का अर्थ है श्रेष्ठ आचरण। श्रेष्ठता का मानदण्ड मनुष्य की आत्मा है। वहां सत्य की आवाज गूंजती है, अतः दया, क्षमा, सहिष्णुता, पवित्रता, मृदुता, नम्रता, विद्योपासना, ईश्वर-भक्ति इत्यादि सद्गुण शिष्टाचार हैं। **''अहिंसा सर्वोत्कृष्ट शिष्टाचार है।''** समाज शिष्ट व्यक्ति का सम्मान करता है। शिष्टचार से आत्मशुद्धि होती है और सब उच्च आदर्श तथा क्रियाएं आत्मशुद्धिमूलक है। रास्ता चलते, चाहे जो खाना, अश्लील गीत गाना, माता-पिता और बच्चों का मिलाकर सिनेमा देखने जाना, भले ही आज आदत बन गई हो, किन्तु यह शिष्टाचार का मूलोच्छेद है।

Let Us Understand The Reason

* सा. मुक्तिप्रिया श्रीजी

हस्तिनापुर नगर में सोमदेव नामक पुरोहित रहता था। वह जैन धर्म का द्वेषी एवं साधु-संतों का कट्टर विरोधी था। इधर मथुरा नगरी के परम प्रतापी राजा ''शंख'' गुरु की वैराग्यवाहिनी देशना सुनकर दीक्षित हुए। वे गुरु की अनुमति पाकर प्रतिमा धारण करके भूमंडल पर भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर नगर के बाहर पधारे। वैशाख महिना, भीषण गर्मी, सूर्य मानो आग उगल रहा था, भर दोपहर के समय मुनि गोचरी के लिये नगर की ओर जाने लगे।

नगर में प्रवेश करने के लिए एक अत्यंत उष्ण मार्ग भी था, जिस पर चलने से पैर जल जाते हैं किन्तु शंखमुनि उस पथ से अनजान थे, उन्होंने भिक्षार्थी नगर में जाने का मार्ग सोमदेव से पूछा। उसने ईर्ष्यावश मुनि को ''हुतवह'' नामक उष्ण पथ बता दिया ताकि ये मुनि छटपटाकर तुरन्त मर जायेंगे, मुझे यह देखकर आनंद आएगा।

जैसे ही मुनि उस मार्ग पर आगे बढ़े, सोमदेव मार्ग को टकटकी लगाकर देखने लगा- ''अभी मुनि उछलेंगे, गिरेंगे, मरण की शरण में चले जायेंगे।'' किन्तु यह क्या ? मुनि तो अस्खलित गति से बढ़ते जा रहे हैं ? उसे आश्चर्य हुआ अरे ! रथ में बैठकर जाने वाले सैनिक भी घोड़ो के उछलने से रथ से गिरकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते है वहां नंगे पैर जाने वाला ये साधु प्रसन्तापूर्वक कैसे चल रहा है ? वह अपने भवन से नीचे उतरा और उसी उष्णपथ पर नंगे पैर चलने लगा, उसे वह मार्ग ठंडा प्रतीक हुआ। सोमदेव को समझते देर नहीं लगी कि सचमुच मुनि के तपोबल से उष्णमार्ग भी ठंडा हो गया है ! उसे मन ही मन पश्चाताप हुआ, ओह ! ऐसी तपोधनी को दुःखी करके मैंने घोर पाप कर्म का बन्ध किया है इसका प्रायश्चित यही होगा कि मैं इन्हीं मुनिवर का शिष्य बन जाऊं।

ऐसा विचार कर वह शंख मुनि के पास गया एवं पश्चातापपूर्वक उनके चरणों में झुककर अपने पापों को प्रकाशित करने लगा। शंखमुनि ने उसे आश्वासित करके संयम का उपदेश दिया, जिससे उसे संसार से विरक्ति हो गई। फलतः उसने दीक्षा ग्रहण कर ली। दीक्षा लेकर ज्ञान दर्शन चारित्र की सुन्दर आराधना की किन्तु जातिवाद का भूत अभी तक उसके सिर से नहीं उतरा था। वह बार-बार सोचता था कि मैं ब्राह्मण हूं, उत्तम जाति का हूं ! हीन जाति कुल के लोगों से बात करने में, उन्हें उपदेश देने में और उनके घर भिक्षार्थ जाने में वह संकोच करता था। सुन्दर संयम जीवन का पालन करके वे सोमदेव मुनि देवलोक में गये एवं वहां का आयुष्य पूर्ण करके पूर्वभव के जातीय अहंकार के कारण उन्हें चांडाल कुल में जन्म लेना पड़ा।

इस प्रकार जातिस्मरण ज्ञान के आलोक में हरिकेशीबल जातिमद के दुष्परिणाम को तथा संसार के भोगों की तुच्छता एवं असारता को भलीभांति समझ कर विरक्त हो गए। मुनि बनकर देहभाव को छोड़कर उत्कृष्ठ तपस्या करने लगे जिसके फलस्वरुप उन्हें कई शक्तियां और लब्धियां प्राप्त हो गई।

चिंतन व्यापक हो, सत्ता सीमित हो....

हिन्दुस्तान में विद्या कम थी, ऐसा नहीं है। बल्कि, सच तो यह है कि हिंदुस्तान में सबसे पहले विद्या शुरु हुई थी। परन्तु विद्या पर कभी राजाओं की सत्ता नहीं थी। विद्या किस तरह देना, यह बात गुरु तय करते थे। राजा उनकी मदद करते थे। राजपुत्र भी उनके पास आते थे और गुरु राजपुत्रों को सामान्य लोगों के लड़कों के साथ रखते थे। सामान्य विद्यार्थी भिक्षा मांगते थे,तो राजपुत्रों को भी भिक्षा मांगने के लिये भेजा जाता था। आश्रम चलाने के लिये राजा मदद करते थे, लेकिन राजपुत्रों के लिये विशेष सहुलियतें नहीं मांगते थे। इस तरह हिंदुस्तान में विद्या अत्यंत स्वतंत्र थी। जिसे संस्कृत भाषा का ज्ञान है, वह जानता है कि हिंदु-धर्म में कितना विचार-स्वातंत्र्य है। हमें दूसरा धर्म मालूम नहीं है, जिसमें परस्पर-विरोधी विचार हैं, दूसरे धर्मो में एक ही विचार है, लेकिन हिंदू-धर्म में कपिल, कणाद, जैमिनी इत्यादि के विचार परस्पर विरुद्ध थे। परन्तु कोई नहीं कहता कि वे हिंदू-धर्म के खिलाफ हैं। आजकल बहुत से लोग ऐसे हैं, जो ईश्वर को नहीं मानते। लेकिन इसलिये वे धर्महीन है, ऐसा कहना गलत होगा। इतना विचार-स्वातंत्र्य यहां था। कारण, विद्या स्वतंत्र थी। सत्ता का अंकुश विद्या पर नहीं था। आज जैसे लश्कर सरकार के हाथ में है, वैसे शिक्षा भी सरकार के हाथ में है। इतनी व्यापक सरकार बनी है। सरकार व्यापक चिंतन करती है, तो अच्छा है। पहले की सरकार व्यापक चिंतन नहीं करती थी, यह अच्छा नहीं था। परन्तु सत्ता व्यापक नहीं होनी चाहिये। पहले चिंतन व्यापक नहीं था। आज सत्ता व्यापक है। चिंतन व्यापक होना चाहिये और सत्ता सीमित होनी चाहिये। पहले सत्ता भी सीमित थी और चिंतन भी सीमित था। हम चाहते हैं कि सरकार का चिंतन व्यापक हो और उसकी सत्ता सीमित हो। **- विनोबा**

विनय दर्शन

स्व-पर कल्याण हों वहीं सच्ची लोकप्रियता है। धार्मिक व्यक्ति में यह लोकप्रियता अंदर से आती है, यह बाहर की बातों से या भाषणों से नहीं आती, दुनिया इतनी मूर्ख नहीं जो झुठे को सच्चा मानें, ये भावनाएं जब जीवन में उतरती हैं, तभी दुनिया मानती है और तभी व्यक्ति लोकप्रिय बनता है।

यह विश्व सागर के समान चंचल है, गुणहीन मनुष्य लोकप्रिय होने की कोशिश में लगा रहेगा, फिर भी थोड़े ही वक्त में सच्चाई सामने आते ही वह दूर फेंक दिया जाएगा। लोकप्रवाह में काम करना अग्नि के साथ खेलने के समान है, अग्नि के पास जाना है तो पानी बनकर रहना होगा।

कुछ सेवक शिकायत करते है कि- समाज कद्र नहीं करता, पर सच तो यह है कि ऐसे लोगों में ऐसे गुण नहीं होते कि जिनकी कद्र की जाए। समाज की सेवा करनी है तो परीक्षा तो होगी, स्वर्ण भी अग्नि में जलकर ही शुद्ध होता है। आडंबर, खुशामद से लोकप्रियता नहीं बढ़ती है, हां बढ़ती है सद्‌गुणों से, सदाचरण से। लोकप्रिय व्यक्ति के तो विचार भी उदार होने चाहिए। आज मन की संकुचितता से लोग हीनग्रंथी से ग्रसित होते हैं, यही वजह है कि जगह-जगह पर झगड़े, विवाद, महामारी, सम्प्रदाय बढ़ रहे हैं। आज शिक्षा बढ़ी है परन्तु विचारों की संकुचितता से, प्रांत भाषाएं सब बढ़ रहे हैं, बटवारे हो रहे हैं।

विचार उदार, सुंदर होंगे तो विशालता आएगी, जहां भी अच्छा दिखे ग्रहण करना चाहिए, इससे अच्छा प्राप्त होगा, बुरा छुटेगा, दो फायदे हैं।

धर्मी के लिए प्रथम भूमिका स्याद्‌वाद अपनाना है, सबको सुनो, समझो, सबके साथ एकता, समभाव रखो। विद्वान ब्राह्मणों को भगवान श्रीमहावीर ने सुना उनके प्रश्नों, शंकाओं का समाधान किया, फिर वो प्रभु के बन सके, उनके गणधर बने।

समाज में काम करनेवालों को जीवन के प्रवाह को समझकर उसके साथ चलना चाहिए। इसका आशय यह नहीं कि बस लकीर के फकीर बने रहें। जीवन की अनेकानेक धाराएं है किसी एक धारा को पकड़ना और दूसरी को छोड़ देना भी यथेष्ट नहीं है। बल्कि उन सभी धाराओं के नियमित एकत्रीकरण को उसके प्रवाह चक्र को समझने की आवश्यकता है।

जीवन में संयोग नाम का कोई स्थान नहीं है। सब कुछ पूर्व सुनियोजित है। वह तो हमने नाम दे दिया है संयोग का। अनायास घटने वाली घटनाएं भी अकसर इसी जीवन प्रवाह के सतत संघर्षण का परिणाम है, आवश्यकता है तो बस उसे समझने की। उसके अनुरुप आचरण करने की। Any plan is God. यह विचारों की उदारता यानि स्यादवाद्, इसे सापेक्षवाद Theory of Relativity कह सकते हैं।

हमने प्रथम दान तथा उदारता गुण के बारे में चर्चा की, दूसरा गुण है विनय। मोर की सुंदरता उसके पंखों से है, पंख बिना उसकी शोभा नहीं। इसी तरह समाज में काम करने वाले के पास ज्ञान, सत्ता, स्थान सब कुछ होते हुए भी यदि विनय गुण नहीं है तो वह अधूरा ही दिखेगा।

नेताओं को तो दूसरों को मार्गदर्शन देना है, अपने साथ वालों की गति शक्ति को भी परखना है। नेता दौड़े और प्रजा पीछे रहे, यह कैसे हो सकता है। गाड़ी के इंजन और डिब्बों की तरह नेता तथा समाज का संबंध होना चाहिये। यदि नेता ऐसा विचार करता है कि ''मैं सत्ता पर हूं, मैं समाज से ऊंचा हूं, समाज तो भेड़ चाल की तरह चलता है।'' ऐसा सोचने पर उसमें अहम् एवं गर्व आता है तथा उसका पतन होता है।

इसीलिए भगवान श्रीमहावीर ने कहा कि -संयोगों से मुक्त हे मुनिजनों, तुम्हें सद्‌गुणों तथा धर्म की शुरुआत में विनय के बारे में प्रथम कहूंगा, फिर दूसरी बात कहूंगा। लोग तुम्हें वंदन करेंगे, तुम्हारी चरण धूलि सर पर चढ़ायेंगे, उस समय यदि जागृत नहीं रहे तो गर्व रुपी सर्प तुम्हें डस लेगा। इसलिए भगवान ने प्रथम विनय सिखाया, विनय बिना तो भलभलों का पतन हो जाता है।

साधु संतों के जीवन में भी यदि विनय गुण न हों तो गर्व कब उछल पड़ेगा, जानना मुश्किल है। श्रीस्थूलिभद्र जिनका नाम ही मंगलरुप है, जो शील के अवतार थे, उनको भी एक बार अहम् आ गया था।

मुनि श्रीस्थूलिभद्र अत्यंत ज्ञानी थे, एक बार उनकी बहनें सेणा, वेणा, रेणा वगैराह उनके दर्शन हेतु आई, गुरु ने कहा- स्थूलिभद्र उपर है। स्थूलिभद्र को इस बात का पता चल गया, उन्होंने सोचा- अपनी ज्ञान शक्ति का प्रभाव बहनों को दिखाऊं। वे सिंह का रुप धारण करके बैठ गये, बहनें तो सिंह को देखकर डर गई, नीचे जाकर गुरु को बात बताई।

गुरु समझ गये मुनि में विद्या प्रदर्शन का गर्व जग गया है, विद्या का अहंकार आ गया है। कई बार हम सोचते है चमत्कार दिखायेंगे तो लोग अनुयायी बनेंगे, पर हम भूल रहे हैं कि दुनिया को कल कोई नया चमत्कार देखने को मिलेगा, वह पहले चमत्कार को भूल जाएगी। चमत्कार में सच्चा धर्म है ही नहीं, यह तो अल्पजीवी है, केंचुए की तरह। जो धर्म आत्मा की गहराईयों से नहीं निकलता, वह धर्म उसका चमत्कार खत्म होने पर या व्यक्ति के चले जाने पर नष्ट हो जाता है। अवधान जैसे प्रयोग दिखाकर लोगों को सिर्फ चकित करने की भावना हों तो ऐसे प्रदर्शन भी पाप है। धर्म कोई चमत्कार नहीं, यह तो सत्य है।

धन, कुटुम्ब, पत्नी सब कुछ छोड़ सकता है, पर कई बार इन्सान अहंकार नहीं छोड़सकता। अहम् गर्व कब प्रगट जो जाएगा कुछ कह नहीं सकते। बाहुबली ने अपना सर्वस्व त्याग कर दिया था, परन्तु एक अहंकार रह गया था। मैं अपने छोटे भाईयों को वंदन क्यों करु ? केवल ज्ञान प्रगट होने के बाद ही जाऊंगा, जिससे वंदन ही न करना पड़े। ऐसे अत्यन्त ज्ञानी, जो साधना में इतने तल्लीन, एकाकार रहते थे कि पक्षियों ने सिर पर घोंसले बना दिये। सर्दी, गर्मी, बारिश में शरीर को लेशमात्र भी कंपित न होने दिया, उन्हें यह भी अहंकार सता रहा था कि, मैं नमन करुं ? इस गर्व का दर्शन व्यक्ति को बहुत देर से होता है, जब अंतर ज्योति प्रगट होती है तभी इसके दर्शन होते हैं।

जगत गुरु श्रीॠषभदेव भगवान की करुणा बाहुबली पर प्रगटी, उन्होंने ब्राह्मी तथा सुन्दरी दोनों बहनों को प्रतिबोध करने भेजा, उन्होंने कहा- **''वीरा मोर गज थकी उतरो।''** इन सादे शब्दों में आंतरिक भाव का संकेत अद्भूत था,वो जागृत हो गये, छोटे भाईओं के पास जाकर, वंदन करने के लिए कदम बढ़ाया, उसी क्षण केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

इस केवलज्ञान की शक्ति हम सब में मौजूद है परन्तु वृत्तियों के आवरण से आवृत्त है, सच्चे ज्ञानियों के दर्शन श्रवण से अपना अंतकरण खुल जाता है। ज्ञानी तो मिमित्त मात्र है, यह ज्ञान कहीं बाहर नहीं अपने भीतर ही भरा हुआ है, उसने खोलने के लिए चाबी की खोज करनी है हमें।

कई बार बल से नहीं बुद्धि से काम सुगम हो जाता है, इस सत्य की गुरु रुपी चाबी यदि अपने हाथ लग जाए तो अंतर द्वार पल भर में खुल सकते हैं।

स्थूलिभद्र तथा बाहुबली के उदाहरण पूरे विश्व के लिए है, यह गर्व सबके भीतर छिपकर बैठा है। सांप यदि घर में घूम रहा हो तो कौन शांति से सो सकता है ? इसी तरह हमें अपने भीतर बैठे हुए गर्व रुपी सर्प से हमेशा संभलकर रहना है।

इसीलिए विनय नामक सद्‌गुण को आवश्यक गिना गया है, इस बात को समझेंगे तभी हम कह सकेंगे कि हम कुछ समझे हैं। आटे को अच्छी तरह गूंथा जाए तो ही रोटी अच्छी बनती है, इसी तरह विनय गुण धारण करने से ही जीवन सुंदर बनता है।

आज की शिक्षा में यह अत्यंत जरुरी है, प्रोफेसर बोलते रहते हैं, छात्र-छात्राएं उनकी मजाक करते रहते है, ऐसी विद्या आर्शीवाद रुप नहीं बल्कि अभिशाप रुप बन जाती है।

राजा बिंबसार ने चांडाल के पास से विद्या ग्रहण करने का बहुत प्रयास किया पर न प्राप्त कर सके। उन्होंने अभयकुमार से इसका कारण पूछा, उन्होंने कहा- ''महाराज बर्तन में पानी भरने के लिए उसे कुंए में डालना पड़ता है। बर्तन को टेढ़ा करना पड़ता है, नमना पड़ता है, तभी उसमें पानी भरता है। इसी प्रकार ज्ञान प्राप्ति के लिए विनय द्वारा नमन करना पड़ता है। आप अपने से ऊंचे स्थान पर चांडाल को बिठाईये और आप उसके स्थान पर बैठिए। जब तक हममें लघुता,नम्रता नहीं आती, तब तक हमें वस्तु, स्वरुप की जानकारी तो भले प्राप्त हो सकती है, पर आंतरिक ज्ञान हम नहीं पा सकते। ज्ञान तो अंतर की खोज है।

अतः ज्ञानियों ने फरमाया है, जो अक्षर के रहस्य को, ज्ञान को समझता है, उसी का जीवन अक्षर-अमर बनता है केवल कागज पर लिखे अक्षरों की ज्यादा कीमत नहीं होती।

और यह सब विनय बिना नहीं मिल सकता। आखिरकार मगध के महान सम्राट बिंबसार चांडाल के स्थान पर बैठे, तब ज्ञान की प्राप्ति हुई। जो मोम की भांति नर्म बनकर पिघलता है, वही समाज में अमर बनता है। हृदय की गहराईयों से जगी हुई नम्रता से समाज भी वश में हो सकता है।

नवकार का जाप क्यो करें ?

आभामंडल को निर्मल करें ! (लेश्या शुद्धि)
कषायतंत्र को तोड़ डाले !
पृथ्वीतत्व से चेतना को बाहर निकाले !
सत्य का शोधन करें !
देहाध्यास दूर करें !
चैतन्य का स्पर्श करावे

लघुमति

*पंन्यास श्री चन्द्रशेखर विजयजी

सामान्यतः ऐसा कहा गया है कि जो पक्ष बहुमत में हो वह शासन कर सके, उसकी बात स्वीकारी जा सके, आदि।

भारत में हिन्दू प्रजा का बहुमत है तो अब उनके धार्मिक सामाजिक, शैक्षणिक परंपराओं के मूल्यों की ही इस देश में प्रधानता होनी चाहिए न ?

लेकिन नहीं, देशी अंग्रेजों को यह बात मान्य नहीं। वह या तो हिन्दू प्रजा को खत्म करना चाहता है, या धर्म परिवर्तन करवाना चाहता है, आखिर हिन्दू रखकर हिन्दू शैली ईसाई बनाना चाहते है।

''इसलिये उसके बहुमत के हक को भुगतने न मिले इसके लिये ''लघुमत न्याय'' नामक एक तूत खड़ा कर दिया है। उसके द्वारा वे ''लघुमत'' को सब सबलत देने की व्यवस्था बना रहे हैं। यहां वह यह कह रहे है कि- बहुमत की ताकत पर हिन्दूओं लघुमत के इस्लाम, ईसाई आदि को कुचल दें तो ! नहीं.... उनको भी भारत देश में पूरा न्याय मिलना चाहिए !''

ऐसा कहकर देशी अंग्रेजों ने लध्रुमत की मुख्य प्रजा (मुस्लिम और ईसाई) को सब सवलतें देने के लिए कायदे किये। शिक्षा और तबीबी सेवा की संस्थाओं में, राजकारण में.... सर्वत्र उनको पहला मौका.... कम प्रतिशत में (शून्य गुणवत्ता होते हुए भी) मिलने लगी। ऐसा कुछ हिन्दू के बहुमत प्रजा को नहीं मिल सकतें।

चालीस प्रतिशत मार्क्सवाला विद्यार्थी जो अनुसूचित जनजाति आदि हो तो वैसी संस्था में प्रवेश तुरन्त मिल जाए परन्तु सवर्ण हिन्दू-विद्यार्थी पचासी प्रतिशत पा कर वेटिंग लिस्ट में खड़ा रहता है।

इसमें पछात वर्ग को ऊपर उठानेवाली बात करते उन्हीं वर्गो को नीचे गिराने की बात गुप्त रुप से छिपी हुई है। ब्राह्मण आदि वर्ग के पास ही राज चलाने की या युद्ध लड़ने की पूरी क्षमता है। अगर उसे बाजू पर धकेल दिया जाए तो पछात वर्ग के द्वारा राष्ट्ररक्षा आदि काम हो नहीं सकते। जिससे राष्ट्र आदि सब का पतन हो जाए।

जो लोग इस देश की प्रजा को बरबाद करना चाहते है उनके तो वारेन्यारे हो गए हैं। ''लघुमत'' को सब लाभ मिलने के न्याय बनने से उच्च वर्ण के ब्राह्मण आदि लघुमत कौम के पिछड़े हुए वर्गो में जा रहे हैं।

रामकृष्ण मिशन, स्वामी नारायण पंथ, कुछ जैन ने अपनी कौम को लघुमत में शामिल करने के लिए सरकार में अरज दाखिल कर दी है।

सिख और बौद्ध भी बहुमत हिन्दुओं में से अलग होने के लिए जोरदार प्रयत्न कर रहे हैं।

अगर सब इस तरह हिन्दू प्रजा में से अलग होने लगे, अगर हरिजन, दलित, आदिवासी भी अपने आपको हिन्दू से मिटा दें तो एक समय ऐसा आयेगा कि रातोंरात हिन्दू प्रजा जंगी बहुमत से लघुमत में आ जाएगी।

आज तो भारतदेश की सरहद से जुड़े हुए सात राज्य मिजोरम आदि में ईसाईओं का बहुमत हो गया है। वहां हिन्दू लघुमत में है।

इसलिये भारत सरकार ने उस राज्य के हिन्दू को लघुमत में शामिल करके लघुमत को प्राप्य लाभ उनको देना चालू कर दिया है।

हाय, हिन्दुस्तान में ही हिन्दुओं का लघुमत ?

मैं जैन धर्म का साधु हूं इसलिए जैनधर्म की जैन कौम के लिए कुछ कहूंगा।

इस कौम के (चार सम्प्रदायों के) कुछ श्रीमंत शिक्षा एवं लंबीबी संस्थाओं में विद्यार्थियों को कम प्रतिशत मार्क्स से प्रवेश आदि के लाभ सुलभ हों उस लालच से जैन कौम को लघुमत में लाने का आग्रह जारी है।

अगर यह कारण हो तो 10-15 करोड़रुपयों का कायमी फण्ड करके जैन विद्यार्थियों को जरुर पैसे दिया जा सकते है। बाद में उसे ''लघुमत'' में प्रवेश लेना न पड़े।

जैन प्रजाजन के नाते तो हिन्दू ही हैं। हाँ.... उनका धर्म जैनधर्म है। सिख भी प्रजाजन के नाते हिन्दू हैं। हां, उनका धर्म सिख है।

जो हिन्दू धर्म कहलाया जाता है वह वस्तुतः वैदिक धर्म है। हिन्दू नामक कोई धर्म ही नहीं है। उस नाम की प्रजा है। जो गडबड़ हुई है वह यहां हुई है कि हिन्दू वह प्रजा है और वैदिक, जैन आदि उसके धर्म है।

(आज तो सभी हिन्दू नाम का धर्म कहते हैं। इसलिए जैन अपने को हिन्दू कहने से हिचकिचाते हैं। अगर हिन्दू नाम

की प्रजा कहलाए तो जैन भी अपने को जैन धर्म के हिन्दू प्रजाजन अवश्य कहेंगे।)

सबूत ! देशी-विदेशी अंग्रेज हिन्दुस्तान की हिन्दू प्रजा को लघुमत में ला देना चाहते हैं। इसलिए यह हिन्दू प्रजा नाम की केक के टुकड़े करके इसे छोटा कर रहे हैं।

सिख, बौद्ध, जैन, रामकृष्ण मिशन स्वामिनारायण पंथ आदि लघुमत का लाभ लेने के लिए हिन्दू में निकल जाएं और पछात, दलित, आदिवासी हिन्दू में से निकल जाएं तो रात रात में ही हिन्दू लघुमत में आ जायेंगे। ''लघुमत'' के लाभ दिखाकर बहुमत को काटने की कैसी बदचाल ?

बहुमतवाले हिन्दू राज्य में बहुमत के पाप का सेवन (!) करते हैं, इसलिए उनके कोई लाभ नहीं और लघुमतवाले को सभी लाभ।

जैनधर्मी लोगों को हिन्दू प्रजा के साथ रहना चाहिये। उनसे अलग हो कर ''लघुमत'' नहीं गिनवाना चाहिए।

आज तक जैनधर्मी लोगों को हिन्दू मान कर वैदिक धर्मी लोग उनके दहेरासर, साधु-संत, संघ आदि की रक्षा करते थे। संभव है कि जैन हिन्दुओं में से अलग हो जाएंगे तब वह कहेंगे- ''अब आप हिन्दू नहीं रहे हैं। इसलिए अब हम हिन्दू आपकी रक्षा नहीं करेंगे।'' आगे बढ़कर ऐसा भी हो कि हिन्दुओं का शासन आए तब लघुमत माने जानेवाले अहिन्दू-इस्लामी या ईसाईयों की तरह जैसे पराये मान कर त्रास दे उस तरह लघुमत ऐसे जैनधर्मी लोगों को भी पराये मानकर परेशान करेंगे।

ऐसा न होने देना हो तो जिसके साथ धर्म का ज्यादा साम्य है, जिसके साथ हजारों लाखों वर्षो से रहे हैं वह हिन्दू प्रजा के साथ ही जैनधर्मी लोगों को हिन्दू प्रजाजन बनकर रहना चाहिये।

एक बात स्पष्ट करना है कि- अगर सरकार ही जैनों को संख्या के कारण लघुमत में गिनकर लाभ दे वही सीधी बात है, किन्तु जैन कौम को तो लघुमत में रखने दिया जाएगा नहीं अन्यथा उपर्युक्त कई गैर लाभ होंगे।

बिना साम्प्रदायिकता का नियम स्वीकार कर उसके तमाम लाभ मुस्लिम और ईसाईयों को मिलते हैं। वह हिन्दू (वैदिक) धर्मो विरुद्ध अगर कहें तो कोई बात नहीं, अगर हिन्दू उनके विरुद्ध कुछ बोले तो वह कौमवादी कहलाएं, उसको सजा होती है।

इसी तरह लघुमत में मुस्लिमों और ईसाईओं को गिनने के कारण उनकी शिक्षा संस्था में बाईबल या कुरान पढ़ाया जा सकता है, किन्तु हिन्दू-कौम ''लघुमत'' में नहीं है, इसलिए उनकी संस्थाओं में गीता नहीं पढ़ाई जाएं।

क्या ऐसे अनेकें तरीकों से हिन्दू राष्ट्र की हिन्दुप्रजा को कुचल कर और विदेशीधर्मो को इस देश में मजबूत करने के लिए ''लघुमत'' का तूत चलाया गया है ?

ओ विदेशी-देशी गोरो ! आपने मिल कर यह कैसा कातिल खंजर तैयार किया है ? जो विराट हिन्दूप्रजा रुप व्हेल मछली के पेट में घुसेड़ने से धीरे-धीरे वह खतम भी हो जाएगी।

मिथ्यात्व जाने पर....

सोचने पर ऐसा लगता है कि राग-द्वेष इतने *खराब नहीं है, जितना मिथ्यात्व खराब है। सच में मिथ्यात्व की वजह से ही राग-द्वेष खतरनाक बनते है। 18 पापों में सब से खतरनाक मिथ्यात्व इसलिये कहा गया है कि उसकी उपस्थिति में राग-द्वेष खतरनाक होते हैं। वे ही राग-द्वेष अगर मिथ्यात्व की अनुपस्थिति में हो तो शत्रु नहीं, लेकिन मित्र बन सकते हैं।*

मिथ्यात्व जाने पर....

स्नेहराग धर्मराग बनता है।

कामराग राम (प्रभु) राग बनता है।

दृष्टिराग दर्शन (जैन दर्शन) राग बनता है।

जो राग पहले मारने वाला था, वही राग तारनेवाला बन जाता है। जो जहर पहले मारनेवाला था, वही अब औषध के रुप में तारनेवाला बन जाता है। जो लोहा पहले डुबोनेवाला था, वही अब नाव में खीली बनकर तारनेवाला बन जाता है।

मिथ्यात्व जाने पर धर्मी आदमी राग करेगा लेकिन देव, गुरु और धर्म पर ! द्वेष करेगा, लेकिन विषय और कषायों पर !

प्रशस्त बने हुए राग-द्वेष नाव और पतवार बनकर धार्मिक आत्मा को संसार-सागर से पार लगाकर मुक्ति-किनारे छोड़कर स्वयं वापस लौट आते हैं।

दृढ़प्रहारी मुनि की कथा

✻ मुनि श्री जयानन्द विजयजी म.

माकन्दी महानगरी में समुद्रदत्त ब्राह्मण रहता था। समुद्रदत्ता उसकी पत्नी थी, एक दिन उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसके ग्रह ही ऐसे थे कि ज्यों-ज्यों उसकी उम्र बढ़ती गयी, त्यों-त्यों वह अधिकाधिक शैतानियां करने लगा। जवान होने तक तो उसने सैकड़ों जुल्म कर दिये। जवानी आने के साथ ही हत्या, झूठ, चोरी, परस्त्रीगमन, भक्ष्याभक्ष्य का अविवेक, माता-पिता की अवज्ञा आदि हर पाप को खुलकर करने लगा। किसी की हितकर बात भी नहीं सुनता था। नगरी में वह मतवाले सांड की तरह बेरोक-टोक जुल्म और ज्यादस्तियां करता हुआ स्वच्छन्द घूमा करता था। एक दिन राजा के पास उसकी शिकायत पहुंची। राजा ने उसे नगरी में रखने के लिए अयोग्य जानकर दुर्गपाल को बुलाकर आज्ञा दी- **''फूटा ढोल पीटते हुए अपराधों की घोषणा कर इस अधम ब्राह्मण को मेरी नगरी से निकाल दो।''** नागरिकों ने भी इस सजा का समर्थन किया। फलतः दुर्गपाल ने राजज्ञानुसार उसे नगरी से निकाल दिया। वह उद्दण्ड ब्राह्मण रोष से भन्नाता हुआ मन में द्वेषभाव की गांठ बांधकर नगरी से बाहर निकला और सीधा एक भिल्ल-पल्ली में पहुंच गया। वहां भिल्लपति ने उसके लक्षणों से उसे अपने कार्य के लिए कुशल व योग्य जानकर उसका स्वागत किया और कुछ ही दिनों में उसकी पराक्रमों को देखकर उसे अपना उत्तराधिकारी (डाकुओं का सरदार) बना दिया उसको भल्लपति ने अपनी सारी संपत्ति भी सौंप दो। बहुत से जीवों को एक ही झटके में निर्दयतापूर्वक मार डालने व उसके अत्यंत साहसिक कामों के कारण लोगों में वह **''दृढ़प्रहारी''** के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

एक दिन दृढ़प्रहारी बहुत से डाकुओं को साथ लेकर कुशस्थल नगर लूटने के लिए चला। उस नगर में देवशर्मा नाम का एक अत्यंत दरिद्र ब्राह्मण रहता था। उसने बड़ी कठिनाई से सामग्री लाकर आज खीर बनाई थी। खीर की हंडिया नीचे रखकर वह नदी पर नहाने के लिए चला गया। इनमें से एक लूटेरा इसी ब्राह्मण के घर में घूसा। उसने और कुछ न देखकर खीर का बर्तन उठाया। यह देखकर उस ब्राह्मण का लड़का रोते-रोते अपने पिता को खबर देने नदी पर पहुंचा। भूख से छटपटाता हुआ वह ब्राह्मण भी यह सुनते ही झटपट दौड़ हुआ घर आया। तब तक लूटेरा खीर की हंडिया लेकर भाग चुका था। पर देवशर्मा ने क्रूद्ध होकर लोहे की बड़ी अर्गला उठाई और उस लूटेरे को मारने दौड़ा। कुछ ही दूर जाने पर उसे लूटेरा मिल गया। दोनों में परस्पर गुत्थम-गुत्थी होने लगी। इसी बीच दृढ़प्रहारी भी वहां आ पहुंचा। उसने तलवार के एक ही झटके से इस ब्राह्मण को मार गिराया। ब्राह्मण को अंतिम सांस गिनते देख उसके घर की गाय पूंछ उठाकर रोषवश दृढ़प्रहारी को मारने दौड़ी। मगर दृढ़प्रहारी ने उसे भी नीचे पटककर क्रूरतापूर्वक मार डाली। उसी समय पति को मरते देखकर उस ब्राह्मण की गर्भवती पत्नी रोती-चिल्लाती, विलाप करती जोर-जोर से दृढ़प्रहारी को कोसती और आँसू बहाती आई। दृढ़प्रहारी ने आव देखा न ताव, उसके पेट में छुरा भौंककर उसे भी यमलोक पहुंचा दी। उसके पेट में से गर्भस्थ शिशु बाहर निकला और जमीन पर छटपटाने लगा। यह देखकर निर्दय दृढ़प्रहारी के मन में सहसा दया का अंकुर फूटा। वह पश्चाताप करने लगा- ''हाय ! मैंने कितना अनर्थ कर डाला ! धिक्कार है मुझे इस प्रकार के अधर्मकर्मकारी को ! इस निर्दोष, अनाथ और गर्भवती अबला को अकारण मारते हुए मुझे शर्म नहीं आई ! सचमुच, मैंने एक साथ चार जीवों की हत्याएं कर दी। एक हत्या भी नरकगति की कारण होती है। तो इन चार हत्याओं के फलस्वरुप कौन-सी दुर्गति मिलेगी ? अरर ! दुर्गतिरुपी कुंए में गिरते हुए मुझे कौन बचाएगा, कौन शरण देना ? इस प्रकार पश्चाताप, आत्मनिन्दा और विरक्ति त्रिवेणी में गोते लगाता हुआ दृढ़प्रहारी अपने साथियों और सामान को वहीं छोड़कर झटपट नगर से बाहर निकल कर एक वन में पहुंचा। वहां एक शांत और तेजस्वी साधु को देखते ही उनके चरणों में गिर पड़ा। नमस्कार करके पश्चाताप पूर्वक अपने सारे पापकर्मों का कच्चा चिट्ठा मुनिवर के सामने खोलकर रख दिया और पूछा- ''भगवन ! क्या कोई ऐसा मार्ग है जिसमें मैं इन हत्याओं के पापों से मुक्त हो सकूं ? मुनि ने आश्वासन देते हुए उसे कहा-''भाई ! घबराओ मत ! ऐसा भी रास्ता है पर वह है-महाव्रतों की आराधना। क्योंकि शुद्ध चारित्र (मुनि धर्म) की आराधना किये बिना ऐसे भयंकर पापों से मुक्ति नहीं हो सकती। निःस्पृह मुनि की बात दृढ़प्रहारी के गले उतर गई। उसे महामोहमय संसार से विरक्ति हो गई। इसलिए उसने वहीं मुनिराज से परमकल्याणकारिणी पापनाशिनी मुनि दीक्षा ले ली।

दीक्षा लेते ही दृढ़प्रहारी मुनि ने अपना नाम सार्थक करने के लिए अपने पापकर्मो पर दृढ़ प्रहार करने हेतु इस प्रकार का दृढ़ अभिग्रह (वज्र संकल्प) कर लिया कि- ''जब तक मुझे ये चार हत्याएं याद आती रहेगी, तब तक मैं आहार-पानी ग्रहण नहीं करुंगा।'' इस अभिग्रह को स्वीकार करके दृढ़प्रहारी मुनि उसी नगर के एक दरवाजे पर कायोत्सर्ग (ध्यान) करके खड़ा रहा। उस दरवाजे से आने-जाने वाले लोगों ने दृढ़प्रहारी को देखा तो एकदम उनकी त्यौरियां चढ़ गई और वे एक दूसरे से कहने लगे- ''यही है वह महादुष्ट हत्यारा अब इसने साधु बनने का ढोंग किया है। ठहर जा दुष्ट, अभी तुझे मजा चखाते हैं। यों कहकर कोई उन्हें मुक्कों से, कोई लातों से, कोई लाठियों से तो कोई ईट-पत्थरों से मारने-पीटने लगे कोई अंटसंट गालियां देने लगे, ''इस दुष्ट का सत्यानाश हो जाय!'' इस प्रकार कोई उसे कोसने लगे कोई दुर्वचन कहकर उसका अपमान करने लगे। परन्तु दृढ़प्रहारी ने उन प्रहारकर्त्ताओं पर जरा भी रोष या द्वेष नहीं किया। वे समभावपूर्वक उस यातना को सहते रहे। जब लोगों के द्वारा फैंके हुए पत्थरों और ईटों का ढेर गले तक आ गया और उनका श्वास रुकने लगा तो उन्होंने कायोत्सर्ग पारित करके वहां से चलकर दूसरे दरवाजे पर आकर कायोत्सर्ग (ध्यान) लगा दिया। परन्तु वहां भी यही हालत हुई। मगर उन्होंने पहले की तरह यहां भी परिषह सहन किये वहां से क्रमशः तीसरे और चौथे दरवाजे पहुंचे लेकिन वहां भी उन पर गाली, मारपीट और प्रहार आदि कष्ट आते उन्हें वे समतापूर्वक सहते और चारों ही प्रकार के आहारों का प्रत्याख्यान (त्याग) कर लिया करते। यों करते-करते निराहारी मुनि दृढ़प्रहारी को 6 महीने हो गये, मगर वे अपने नियम से जरा भी विचलित न हुए। विशुद्ध ध्यान और भावना (अनुप्रेक्षा) के कारण उनका अन्तःकरण क्षमा से निर्मल हो गया। अतः चार घाती कर्मो का क्षय होने से उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ। उसके पश्चात अनेक जीवों को प्रतिबोध देकर केवली दृढ़प्रहारी मुनि मोक्ष पधारें।

इसी प्रकार जो आत्मार्थी साधक आक्रोश, वध आदि अनेक परिषहों को समभाव पूर्वक सहते हैं, वे अनंतसुखों से युक्त मोक्ष को प्राप्त करते हैं, यही इस कथा का मुख्य उपदेश है।

अहमाहओ त्ति न य पडिहणंति, सत्ताऽवि न य पडिसवंति।
मारिज्जंताऽवि जई, सहंति सहस्समल्लु व्व ॥

शब्दार्थ- इस व्यक्ति ने मुझे मारा-पीटा है, ऐसा जानते हुए भी सुविहित साधु उसे मारते-पीटते नहीं, किसी ने उन्हें शाप दिया है, तो भी वे बदले में उसे शाप नहीं देते। बल्कि किसी के द्वारा मारने-पीटने पर भी वे समभाव में उसे सहते हैं। जैसे सहस्रमल्ल मुनि ने प्रहार आदि सहन किये थे, वैसे ही अन्य साधकों को सहने चाहिये।

समताः- एक स्थान पर पक्षी बोल रहा था- तर.... तर.... तरकत!

तर.... तर....तरकत!

सुननेवालों ने अपनी-अपनी कल्पना के मुताबिक इसमें से अर्थ निकाला।

मुस्लिम बोला- यह पक्षी बोलता है- अल्ला तेरी अचरज!

खिस्ती बोला- इसु! तेरी अचरज!

व्यापारी- हल्दी मिरच अदरख!

पहलवान- मंगदल कसरत!

धर्मवादी- राम सीता दशरथ!

देखा न? एक ही घटना को सब अपनी-अपनी दृष्टि से किस प्रकार देखाते हैं? यही तो मन का खेल है।

हमारे स्वयं के चित्त में भी प्रतिक्षण परिवर्तन होता रहता है। कल जिस पदार्थ को जिस तरह देख रहे थे, आज उसे बिलकुल भिन्न दृष्टिकोण से देखाते हैं।

चित्त-तंत्र में सतत चलते राग-द्वेष के तरंगों के आघात-प्रत्याघात जब शान्त हो जाते है, तब अचानक ही साधक समता को उपलब्ध होता है। तरंग शांत होते ही जिस प्रकार पानी के तल पर पड़ा हुआ रत्न साधक देखता है उसी प्रकार वह अपने भीतर ही समता का दर्शन करता है और वह पुकार उठता है- अरेरे.... यह समता, यह आनंद मेरे पास ही थे। मैं व्यर्थ ही दूसरी जगह ढूंढ रहा था। बनियान के नीचे ढका हार न देखने पर कोई आदमी चारों और खोजबीन करें, किन्तु अचानक ही छाती पर हाथ जाने पर वह बोल उठता है- ओह! हार तो मेरे कंठ में ही है। साधक भी कहता है- समता तो मुझमें ही है, बाहर कहीं भी नहीं।

सच्चा आनंद समता से मिलता है। समताजन्य वह आनंद हम में होने पर भी हम उसकी बाहर खोज कर रहे हैं। यह खोज करते-करते अनंतकाल बीत गया, किन्तु आज-तक हमें आनंद मिला नहीं। मिले भी कैसे? बाहर हो तो मिले न? अंदर अंधेरा होने से बाहर खोज की, लेकिन यों कैसे मिले?

जिन शासन ऐसे ही महान नहीं है जैन जगत को रोशन करने वाले आचार्य भगवंत

आपश्री ने संयम जीवन उज्जवल किया कैसे ?

1- 33 सिद्धि तप किये।

2- 17 सिद्धि तप आयंबिल से।

3- प्रतिदिन 20 पक्की नवकारसी गिनना।

4- 100+33 वर्धमान तप की ओली।

5- 68 उपवास की तपस्या।

6- नवकार महामंत्रानुसार 68 उपवास की आराधना।

7- 550 आयंबिल संलग्न दो बार किये।

8- जीवन में 20,000 से अधिक आयंबिल।

9- आयंबिल में 7 द्रव्य से अधिक नहीं वापरते।

10-80 वर्ष से लगातार प्रत्येक महापर्व पर्युषण में 1-2-3 उपवास की आराधना याने 6 उपवास।

11-दीपावली पर्व पर अठ्ठम तप की आराधना हमेशा के लिये।

12- हर चौमासी से छट्ठ तप।

13-पौष दशमी की आराधना अठ्ठम तप से।

14-122 दिन का श्रेणी तप।

15-श्री शत्रुंजय गिरीराज की 1800 से अधिक यात्रा। **एकासणा+आयंबिल+उपवास से।**

16-14 बार चौविहार छट्ठ कर 7 यात्रा।

17-श्री गिरनार तीर्थ की 33 दिन में 111 यात्रा-चौविहार+अठ्ठम कर 11 यात्रा।

18-तलाजा की 15 दिन में 108 यात्रा।

19-श्री कदम्ब गिरी की 108 यात्रा।

20-प्रतिदिन दूसरी पोरसी के बाद ही पच्चखाण पारना।

21-करोड़ों की संख्या में वर्धमान विद्या का जाप।

22-करोड़ों की संख्या में सूरी मंत्र का जाप।

23-संयम जीवन के 53 में से 52 वर्ष तक आपश्री के शिष्य-प्रशिष्य होने के बाद भी आपके करोड़ों के काप आप ही निकालते थे। महिने में 2-3 बार काप निकालते है मात्र एक घड़ा पानी ही वापरते है।

24- संयम जीवन में कभी भी पेन+बालपेनों का उपयोग नहीं किया।

25-पेसिंल ही वापरते है।

26-धर्मचक्र तप के 83 उपवास एकांतर किये।

27-बीश स्थानक तप के 420 उपवास एकांतर किये।

28-100 ओली में 15 उपवास मौन रहकर किये।

29-84 से 87 ओली साथ में की और सिद्धितप के आयंबिल साथ में किये साथ 45 उपवास किये।

30-64 से 68 ओली लगातार की ओर 30 उपवास भी किये इसके साथ ही प्रतिदिन सिद्धगिरी तलेटी के दर्शन करने तीन बार जाते थे।

31- भारुच-वेजलपुर में 100-24 ओली पर 68 उपवास किये।

32- 45 उपवास में मौन लोच करवाया और 58 उपवास में श्री मुनि सुव्रतस्वामी जिन मंदिर बगैर डोली, कुर्सी के पूजन में चलते गये और शासन तक चलते हुए ही आये।

33-बोटाद चार्तुमास में न्यूमोनिया हो जाने के बाद भी पारणे के पहले अंतिम 27 आयंबिल मुंग के पानी से कर ओली पूर्ण की फि र पारणा किया।

34- 53 वर्ष के संयम जीवन में सिर्फ तीन पात्रा और 1 तरर्पणा का ही उपयोग किया।

35- सहस्त्र कूट के 1024 उपवास एकांतर चालू रहते चौविहार छट्ठ होते समय आपश्री का कालधर्म हुआ।

ऐसे महान तपस्वी परम पूज्य शासन सम्राट श्री नेमीसूरीश्वरजी महाराजा के समुदाय के आचार्य भगवंत पूज्यपाद श्री कुमुदचंद्र सूरीश्वरजी महाराजा। यह जिन शासन ऐसे ही महान नहीं कहलाते है। आपश्री के पट्टधर पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री प्रबोधसूरीजी महाराजा वर्तमान में परमात्मा के शासन की जोरदार प्रभावना कर रहे है।

यह गलतफहमी है कि रुपये हमारे हैं।

एक पर्यटक, ऐसे शहर में आया जो शहर उधारी में डूबा हुआ था !

पर्यटक ने 500 रुपये का नोट होटल रेस्टोरेंट के काउंटर पर रखे और कहा- मैं जा रहा हूं आपके होटल के अंदर कमरा पसंद करने !

होटल का मालिक फौरन भागा घी वाले के पास और उसको 500 रुपये देकर घी का हिसाब चुकता कर लिया !

घी वाला भागा दूध वाले के पास और जाकर 500 रुपये देकर दूध का हिसाब करा लिया !

दूधवाला भागा गाय वाले के पास और गायवाले को 500 रुपये देकर दूध का हिसाब करा दिया !

गायवाला भागा चारे वाले के पास और चारे के खाते में 500 रुपया कटवा आया !

चारे वाला गया उसी होटल पर ! वो वहां कभी कभी उधार में रेस्टोरेंट में खाना खाता था ! 500 रुपये का हिसाब चुकता किया !

पर्यटक वापस आया और यह कहकर अपना 500 रुपये का नोट ले गया कि उसे कोई रुम पसंद नहीं आया !

न किसी ने कुछ लिया , न किसी ने कुछ दिया सबका हिसाब चुकता हो गया।, बताओ गड़बड़ कहां हुई ?

कहीं गड़बड़ नहीं है बल्कि यह सभी की गलतफ हमी है कि रुपये हमारे हैं।

खाली हाथ आये थे, खाली हाथ ही जाना है।
विचार करें और जीवन का आनंद लें।
हमेशा खुश रहे मस्त रहे।
हंसते रहिये, मुस्कुराते रहिये।

गोचरी

हुआ समय गोचरी का, तो घर के द्वार खोल दो,
राह देखो संतों की Bell(घंटी) की आशा छोड़ दो,
''धर्म लाभ'' का स्वर सुनो तो ''पधारो, साहेबजी बोल दो''
विनयपूर्वक खड़े होकर ''मत्थेण वंदामी''बोल दो।

पाटे पर थाली, थाली में पात्र, करो सुपात्र दान,
समस्त परिवार लाभ ले, नन्हों को भी दे ज्ञान,
कच्चे जल से दूर रहे, नीचे गिरे नहीं, रखे इतना ध्यान
फूंक न मारो गर्म दूध में, जयणा का है विधान।

रसोई पूर्व संतों को याद नहीं, बनने के बाद भूलना नहीं,
विनय पूर्वक वहोराओ, टीवी बंद चालू करो नहीं,
केला आधा ही वहोराओ, छिलका पूरा उतारो नहीं,
बहनों माथे ओढ़कर, भाईयों गणवेश बिगाड़ो नहीं।

श्रावक का घर स्वयं बताए, नौकर पुजारी नहीं,
उपाश्रय तक साथ चले, रास्ता इंगित नहीं,
जैनेत्तर भी विचार करें, इन निर्मोही संतों का,
मन ही मन आनंद उठे, सानिध्य मिले गुरुभगवंतों का।

गोचरी का महत्व समझो, मिलता है पुण्य से लाभ,
वर्षो तक संतों के दर्शन नहीं, तरसते है हम और आप,
नयसार और धन्ना सार्थवाह, पामे समकित ज्ञान,
हम भी उनकी राह चले, जो करते है कल्याण।

मन का मंदिर:- *धार्मिक व्यक्ति होने के लिए यह जरुरी नहीं कि- आप मंदिर जाएं ही, क्योंकि मंदिर जाने मात्र से ही कोई धार्मिक नहीं हो जाता बल्किमन के पवित्र होने से धार्मिक होता है। यह भी जरुरी नहीं कि मंदिर जाने वाला व्यक्ति धार्मिक हो जाए, बल्कि धार्मिक व्यक्ति जिस मकान में रहता है वह मकान ही मंदिर हो जाता है। दरअसल मंदिर किसी स्थान या मकान का नाम नहीं बल्कि मन की पवित्र भावदशा है। भक्ति और समर्पण के भाव से भरे मन वाला ही भक्त ही कह सकता है कि तेरे पूजन को भगवान, बना कर मंदिर आलिशान। ऐसा पवित्र मन जिस शरीर में होगा, वही शरीर स्वस्थ और निरोग बना रह सकेगा।*

संस्कृति-प्रदूषक तत्वों से सावधान रहे

* डॉ. अनुपम

आज हम भारतवासियों ने अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को भूल कर विदेशी सभ्यता एवं संस्कृति को को आत्मसात कर लिया है। पत्र-पत्रिकाओं में कितना भी क्यों न लिखा जाए, विदेशी आवरण को धारण किये हुए लोगों पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। विदेशी शिकंजे में फंसे हुए लोगों के अनेक उदाहरण सामने हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में छिनौने प्रकाशन:-

पत्र-पत्रिकाएं अपने संस्करणों/अंकों की बिक्री बढ़ाने के लिए अनाचारी या कदाचारी साधनों का सहारा ले रहे हैं। विदेश से आयातित ''प्रचार (Publicty) '' के इस युग में ''कलि (Sex)'' का सहारा लेकर हम अपने उत्पादों, पत्र-पत्रिकाओं की बिक्री का साधन ढूंढते हैं। अधिकांश दैनिक समाचार-पत्र अपने अंकों के द्वितीय पृष्ठों पर अथवा अंतिम पृष्ठ पर ''सिने-सितारों व-तारिकाओं (Film Stars) की लम्बी-चौड़ी, छोटी-बड़ी तस्वीरों छाप कर हिन्दूस्तानी सभ्यता एवं संस्कृति का खुल्लमखुल्ला अपमान करते हैं। शायद ही ऐसा कोई दैनिक समाचार-पत्र हो, जिसमें सिनेमा और टी.वी. कार्यक्रमों की तस्वीर न दी जाती हो विशेषकर मैग्जीन सैक्शन में। ''चुम्बन और आलिंगन'' अथवा ''नारियों के अधनंगे चित्र'' पत्र-पत्रिकाओं में छापना क्या भारतीय संस्कृति के अनुरुप है। शायद ही कोई ऐसा उपभोक्ता उत्पाद हो, जिसमें नारी/स्त्री/लड़की को न दर्शाया जाता हो, आई-कोचिंग का यह तरीका भारतीय संस्कृति का अपमान ही तो हैं। **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''** वाले भारत देश में नारी की पूजा छोड़ कर धन-लिप्सा के मारे हुए लोग नारी को जग-प्रदर्शन की वस्तु बना बैठे हैं। इसी प्रकार दिल्ली से निकलने वाली शायद ही कोई ऐसी व्यावसायिक पत्रिका हो, जिसके मुख्य पृष्ठ पर किसी औरत या लड़की की तस्वीर न छपी हो। कुछ तथाकथित साहित्य पत्रिकायें भी इस आचरण में पीछे नहीं है।

दूरदर्शन माने दूर के दर्शन:-

हमारे देश का दूरदर्शन भी दूर के दर्शन करवाता है अर्थात् भारतीय दर्शन छोड़कर विदेशी दर्शन करवाता है, जिसमें अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी धूनों, परेडी गानों और चाचा, हू-हू की भरमार देखने को मिलती है। विज्ञापनदाता कम्पनियों का कोई भी उत्पाद किसी औरत या लड़की के दिखाएं बगैर प्रदर्शित नहीं होता है। विदेशी दूरदर्शन ऐसा करें, तो समझ में आनेवाली बात है ? पर जब स्वदेशी दूरदर्शन भी अंग्रेजी में धन-पिपासुओं की हांडी पकाने लगे तो बात समझ में आने वाली कैसे हो सकती हैं। यह कहावत भी चरितार्थ हो ही जाती है। **''नारी चरित्रम् दैवं न जानाति कुतो मनुष्य''** धन के लालच में और ग्लैमर की दौड़ में फंसी हुई लड़कियां और औरत यदि मॉडल बनने के लिए चप्पलें न चटकायें तो कम्पनी वाले अपनी बहू-बेटियों, औरतों से ही मॉडलिंग करवाने पर बाध्य हो जायेंगे, अतः इस सब में दोष हमारे देश की लड़कियों का भी है, जो पर्दो और अखबारों में अंग-प्रदर्शन कर समाज को प्रदूषित कर रही है। इनमें से जेसिका लाल की तरह की मरने वाली लड़कियां भी होती है। ''सत्ता और सम्पत्ति की भूख'' ये सभी प्रकार के आचरण सत्ता और सम्पत्ति की भूख और अनपेक्षित प्रतिस्पर्द्धा के कारण ही उत्पन्न होते हैं। पर्दे पर लाखों लोग देख लें और विज्ञापन बनवाने वाली कंपनियां कुछ दान-पुण्य दें इसी लालसा में लड़कियां, औरतें मॉडल बनने के लिए लालायित रहती है। **''आत्मरक्षित रक्षत''** की भावना से परे काम करने वाले ऐसे लोग न केवल अपनी मर्यादा का प्रदूषित कर रहे हैं, अपितु संपूर्ण भारतीय समाज को भी प्रदूषित कर रहे हैं। सत्ता-लिप्त लोग भी टीवी का सहारा किसी न किसी रुप में लेते हैं, जबकि पूर्णचन्द्र बडाला (पूने) के शब्दों में- ''सत्ता सम्पत्ति का स्वभाव होता है। सत्ता अनाचार करती है और जो उसका विरोध करता है उस पर अत्याचार करता है। अतः सत्ता और सम्पत्ति के प्रतिरोध की शक्ति विकसित करने का प्रयास होना चाहिये।''

आकाशवाणी:-

आकाशवाणी तो वैसे ही आकाश की वाणी की तरह काम करती है। वह मात्र एक सरकारी भोंपू है, जो एक तरफा आवाज में बोलता रहता है। सिनेमा की धुनों और विज्ञापन के शोर-गुल से भरपूर आकाशवाणियां सात्विक-समृद्धि की बातें कर ही नहीं सकती है। उनके घिसे-पिटे वक्ता और स्थानीयकरण के प्रभाव में फंसी हुई दूरदर्शन और आकाशवाणियां चन्द लोगों का भला करके ही अपनी इति-श्री कर लेती है। दूरदर्शन और आकाशवाणी दोनों में ही

शराब (सोडा) विस्की, सिगरेट, बीड़ी, गुटखा आदि के विज्ञापन आ जाते है। यदि कोई चीज बुरी है, उदाहरणार्थ- सिगरेट, तो उस पर ''स्टेच्यूटरी वार्निंग (वैधानिक चेतावनी) अंकित कर देने मात्र से सिगरेट की बुराई दूर नहीं हो जाती है। कायदन तो ऐसी वस्तुओं का उत्पादन ही बन्द कर देना चाहिये। अब प्रश्न उठता है कि बाहर से आए विदेशी क्या पियेंगे, होटलबाजी कैसे चलेगी तो इनके लिए कुछ मात्र आयात कर एकत्रित कर ली जावें समाज तो ऐसी बुराईयों से नहीं उजड़ेगा। यह इसलिए भी जरुरी है, जिससे तामसी प्रवृत्तियां न फैले कहा भी गया हैः- **''प्रवृत्तिं च निवृत्ति च जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते॥** (गीता 16.78) अर्थात् तामसी या असुर स्वभाव वाले मनुष्य न तो ''प्रवृत्ति'' को ही जानते है न ही ''निवृति'' को। ब्रह्मज्ञान की प्रगति के लिए पवित्राता सदाचार और सत्य का अनुशरण आवश्यक होता है।

शर्यत, सट्टा, लाटरीः-

समाज में पहले ''शर्यत'' और सट्टा के रोग थे। आजकल वैधानिक जुए के रुप में ''लाटरी'' का प्रचलन हो गया है। कुछ अखबार इन्हीं टिकटों के नंबर प्रकाशित कर अपनी बिक्री बढ़ाने में मशगूल रहते हैं। सरकार को राजस्व की बात सोचनी पड़ती है, पर उसके लिये अन्य साधनों का खोजा जाना श्रेयस्कर है। महाभारत शर्यत/सट्टा का फल था, तो रामायण सत्ता के लालच का कुपरिणाम। पैसा बटोरने का मर्ज हमारे देशवासियों को हो गया है और इसे वे प्रगति की दौड़ बदलाते हैं, इसलिए भारतवासी परेशान हैं।

विदेशी मशीनों से स्वास्थ्यः-

शीर्षासन, पद्मासन, मयूरासन और कुक्कुट आसन, मलखम और मुद्गर-चालान जैसी भारतीय स्वास्थ्य की बातों को छोड़कर आज हमारे देशवासी मशीनों से व्यायाम करने के मरीज हो गये है। मशीनों में हाथ-पैर, सिर-धड़ फंसा कर, मशीनों की चाल पर शरीरांगों को नचाना कितना हितकर हैं। यदि मोटापा कम करने के लिए एक मशीन का सहारा लिया जाता है, तो मसिल्स बनाने के लिए दूसरी मशीन का इस प्रकार हम मशीनों के गुलाम होते जा रहे है और योगाभ्यास, मनन आदि के तरीकों को जान-बूझ कर भूलते जा रहे है। जिन्नास्टिक, पेरेलल बार्स ने बेवकूफी के कर्त्तव्य दिखाएं हैं। जान-बूझ कर भूलते जा रहे है। जिन्नास्टिक पेरेलल बार्स ने बेवकूफी के कर्त्तव्य दिखाएं है।

ड्रग एब्यूजः-

अपनी सुन्दरता और शेष (आकार) को बनाने व मेन्टेन करने के लिए बहुत से लोग ड्रग्स, स्टेरॉयड़, ताकती दवाओं का प्रयोग करने लगे हैं। जो निश्चिय ही गैर-कुदरती अभ्यास हैं और इसके कुपरिणाम खण्डित एवं अर्द्ध-विकसित या अतिविकसित संतानों के रुप में आने लगे हैं। कुदरती आचरण से हटकर जीवन यापन करने के कारण जितनी दवाओं का अविष्कार होता है, उससे अधिक बीमारियां बढ़ती चली जा रही है। मानव-जाति की कद-काँठी और सौन्दर्य भी समाप्त होता चला जा रहा है।

दलित साहित्यः-

बड़ा आश्चर्य तब होता है, जब लोग दलित साहित्य की बात करते हैं। इसी परिपेक्ष्य में दलित अकादमी या दलित साहित्य अकादमियों की भी स्थापना हो गई है स+हित अर्थात् सर्वांगीण हित की बात सोचनेवाला साहित्य क्या दलित, पद दलित, निर्बल, अशक्त एवं जर्जर साहित्य में प्रकट होना चाहिए जन मानस का विभाजन कर वोट बटोरने की नीयत इस प्रयोजन में स्पष्ट तौर पर झलकती है ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की धारणा वाला हमारा देश भावनाओं में इतना संकुचित हो जाएगा कि वह साहित्य को भी जाति वर्ग के टुकड़ों में बांट देगा, इसकी कल्पना भी स्वतंत्राता संग्राम सेनानियों को हो जाती तो वे देश को आजाद नहीं करवाते।

हम निश्चित रुप से कपटी और विखण्डित होते चले जा रहे है, इसमें शक की कोई गुंजाईश नहीं है। वास्तव में ये सब इन्द्रिय-असंयम के ही रुप है, अतः इन दुराचरणों पर काबू किया जाना चाहिए। कहा भी हैः-

यदा संहरते चायं कर्मोडडगानीद सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

अर्थात् कछुआ अपने अंगों को जैसे समेट लेता है, वैसे ही पुरुष जब सब ओर से अपनी इन्द्रियों को विषयों में समेट लेता है, तब उसकी बुद्धि स्थिर होती है। उपरोक्त सभी सत्ता और संपत्ति के विषय हैं। इनसे बचा रहना ही श्रेयष्कर है।

चार माता

शब्द- अर्थ की माता! अर्थ- चिंतन की माता! चिंतन- ध्यान की माता! ध्यान- समाधि की माता! (शब्द से अर्थ बढ़कर! अर्थ से चिंतन बढ़कर है! चिंतन से ध्यान बढ़कर है! शब्दादि उत्तरोत्तर अधिक से अधिक सूक्ष्म है!)

प्रश्न का समाधान

✻ प्रवर्तक कुन्दन ऋषि

भगवान श्रीमहावीर का समवशरण लगा हुआ था। उनके परम भक्त राजा श्रेणिक अपने पुत्र अभय के साथ पधारे हुए थे। कालसौरिक भी वहां पहुंचा हुआ था। उसी समय एक दिव्य पुरुष वहां आया, उसने भगवान को वन्दन किया। अपने शरीर से झरने वाली रस्सी मानो भगवान को चुपड़ रहा है ऐसा नजर आ रहा था उसके इस अभद्र व्यवहार को देखकर श्रेणिक को अच्छा नहीं लगा। वह मन ही मन क्षुब्ध हो गया। प्रतिकार की भावना जागृत हुई। फिर भी मन मसोस कर चुप रहा। उतने में श्रेणिक को छींक आ गई। तुरन्त उस आगन्तुक श्री ने भगवान से कहा- ''मर जाओ'' अभयकुमार को कहा-''जीओ या मरो'' कालसौरिक से कहा-''तुम जीओ भी मत और मरो भी मत'' और श्रेणिक से कहा- ''जीते ही रहो'' यह कहकर अदृश्य हो गया। श्रेणिक आश्चर्य चकित था। वह कौन था ? और इस तरह बकवास कर गया, श्रेणिक ने भगवान से पूछा- भगवन यह कौन था ? यह क्या बकवास कर गया। उसके उन शब्दों पर मुझे गुस्सा आ रहा है। भगवान ने कहा- राजन् यह दुर्दराँक नामक देवता था। भगवन् उसने आपको मर जाओ ऐसे अपशब्द क्यों कहे। यह शब्द मुझे नहीं जंचे। ऐसे अशुभ शब्द उच्चारण करना कहां तक ठीक है ? राजन् - उसने जो कुछ कहा उसमें बड़ा रहस्य छुपा है यद्यपि मैं तीर्थंकर हूं केवल ज्ञानी हूं फिर भी संसार में हूं। सशरीरी हूं अभी चार कर्म शेष है। मर जाऊंगा तब सिद्ध बुद्ध मुक्त हो जाऊंगा। अनन्त सुख से पहुंच जाऊंगा। फिर न शरीर रहेगा न कर्म न रोग न शोक अतः देव ने ''मर जाओ'' कहा है। मेरे हित की बात करी है। यह तो ठीक है किन्तु अभय कुमार इस समय इतने बड़े राज्य का मुख्यमंत्री है सभी जगह मान सम्मान है यहां परोपकार के कार्य कर रहा है और आगे जाकर दीक्षित बनकर संयमी जीवन से सद्गति को प्राप्त होगा। यहां संसार में जीवित रहना तो भी आनन्द है और यह शरीर छूटने के बाद भी दिव्य शरीर प्राप्त करेंगे। अतः उसके दोनों हाथों में लड्डू हैं। कालसौरिक के लिए तो यह देवता बोल चुका है कि -''जीवो मत और मरो भी मत '' यह कैसे भगवन। राजन यह कालसौरिक बहुत बड़ा पापी है। प्रतिदिन पांच सौ हत्या करता है। इससे यह क्रूर कार्य उसे सातवीं नारकी में ले जायेंगे अभी तो मनुष्य भव में है।

मरने के बाद नारकी में जायेगा वहां दुःखी ही रहेगा अर्थात् यहां भी दुःखी और इससे अनन्त गुणा दुखी वहां रहेगा। यहां जीना भी ठीक नहीं और मरना भी ठीक नहीं है इसलिए उस देवता ने कहा- न जीवो न मरो। श्रेणिक को अपने भविष्य को जानने की भी उत्कण्ठा हुई, उसने पूछा - भगवन उस देवता ने मुझे ''जीवित रहो'' कहा है। इसका क्या रहस्य है। राजन् -आप इस समय इतने बड़े राज्य के मालिक हो। आपको हर तरह की सुविधा यहां उपलब्ध है, सत्ता है, सम्पत्ति है किसी बात की कमी नहीं है अतः आप जब तक जीवित हैं। वहां तक आनन्द में हो सुखी हो, किन्तु यहां का आयुष्य पूर्ण कर आपको प्रथम नारकी में जाना पड़ेगा अतः आपका जीना ही अच्छा है।

आपने यह क्या कहा- आपका भक्त और नर्क में जाएगा। यह कैसे संभव है, दुनिया क्या कहेगी। आपका परम शिष्य आपकी खबर लिए बिना मुंह में पानी तक नहीं लेता है। श्रेणिक एक ही सांस में सब कुछ बोल गया। वह बड़ा बेचैन था। आकुल व्याकुल हो रहा था। राजन् कर्म की भी सत्ता है, कर्म किसी को नहीं छोड़ते हैं। वहां न रिश्वत चलती है न किसी का वसीला चलता है। आप मेरे संपर्क में आने के पहले सहयोगी के साथ आखेट के जंगल में गये थे, वहां एक हिरणी पर आपने तीर चलाया, वह गर्भवती थी। आपके तीर से दोनों जीवों की हिंसा हुई, पाप पर पश्चाताप की जगह गौरव अनुभव किया। मेरा तीर कैसे अचूक काम कर गया। एक तीर से दोनों को बींद दिया। तड़पते जीवों पर प्रसन्नता प्रकट की उसी समय आयुष्य कर्म का बंध हुआ। पंचेद्रिये की घात का परिणाम नर्क ही है। अब उस निकाचित कर्मो को तो भोगना ही पड़ेगा। कर्म तीर्थंकरों को भी नहीं छोड़ते हैं। किन्तु प्रभु। कोई रास्ता बताओ आपका भक्त नरक में जावे यह आपका बड़ा अपमान है। मेरे रोम रोम में आप बसे हैं, छाती फाड़कर देखोगे तो आपके सिवाय कुछ भी नहीं मिलेगा। राजा की आंखों में आंसू टपकने लगे। हे दया निधान आपके मुखार्विंद से उस नर्क का चित्रण सुना है। कितना वहां दुःख है। परमाधार्मिक देव कैसी-कैसी यातनाएं देते हैं। वहां की भीषण गर्मी पानी-पानी करते रहो तो गर्म-गर्म पिघलता हुआ शीशा देवता मुंह में उड़ेल देते हैं। छांया के लिये सालम्बी वृक्ष के नीचे जाओ तो पत्ते के ऊपर से गिरते है तलवार की तरह सम्पूर्ण अंग छेदन भेदन करते है।

एक दिन नहीं दो दिन नहीं कम से कम दस हजार वर्ष

तक वहां कष्ट सहना ही पड़ेगा। एक क्षण भी चैन नहीं भूख निरंतर सताती है, एक कण भी अनाज का नहीं मिलता, ऐसी असहाय वेदना दुख नहीं सहा जायेगा श्रेणिक की आंखों में गंगा बह निकली मुझे इस दुख से बचाओ। बाघ आज बकरी बन गया था। सिंह गाय बन गया था।

राजन् -तुम सम्यक् ज्ञान के धनी हो, तुम्हारे मुंह से ये कायरता के शब्द नहीं सुहाते हैं। सुख-दुःख में सम्भाव रखो। ज्ञाता दृष्टता बन जाओ और आत्म भाव में रहोगे तो कर्मो का बंधन नहीं होगा अब जो स्थिति निर्माण हुई है उसे तो बदल नहीं सकते। आप क्षणिक सम्यकत्व के धनी हो। इस सम्यक् दर्शन की ज्योति भी जलती रहेगी, उसका प्रकाश तुम्हें वहां की अशांति में सम्बल देगी, विचलित नहीं होने देगा। वहां का लम्बा समय भी समभाव में रहने का संबल देगा और वहां से आयुष्य पूर्ण कर आप भी मेरे जैसे प्रथम तीर्थंकर पद्यमान बनोगे अब थोड़ा भी खेद मत करो। आर्त और रौद्र ध्यान से मुक्त हो जाओ। अपनी आत्मा विभाग में मत जाने दो। भगवान की पवित्र वाणी सुनकर श्रेणिक शांत हुआ। कैसे थे वो भक्त कैसे थे वो भगवान्। वन्दना कर श्रेणिक चल पड़ा। कैसे थी वह भगवान भक्त की जोड़ी। रागी और वितरागी का अपूर्व मेल इतना होने पर भी रागी था और वितरागी ही थे।

धन से विरक्ति

एक बार एक धनी सज्जन श्री रामकृष्ण परमहंस के पास पहुंचे वे उनसे धन लेने का विनम्र आग्रह करते हुए बोले- महाराज! आप इस धनराशि को स्वीकार कीजिए व परोपकार के कार्यो में लगा दीजिए। परमहंस बोले- भाई! यह मुझसे नहीं होगा, क्योंकि तुम्हारा धन ले लेने के कारण मेरा चित्त उसमें लग जायेगा व मेरी मानसिक शांति भंग हो जायेगी। धनिक ने तर्क करते हुए कहा- महाराज! आप तो परमहंस है। आप का मन उस तेल बिन्दु के समान है जो कामिनी-कंचन के महासमुद्र में स्थिर होकर भी सदैव उससे अलग रहेगा। परमहंस गंभीरतापूर्वक बोले- ''भाई! क्या तुम्हें ज्ञात नहीं कि अच्छे से अच्छा तेल भी यदि बहुत दिनों तक पानी के सम्पर्क में रहे तो वह अशुद्ध हो जाता है, और उससे दुर्गन्ध आने लगती है।''

धनी को बोध हुआ व उन्होंने अपना आग्रह छोड़ दिया तथा धन का उपयोग स्वयं वही परोपकार में कर दिया।

विश्वविद्यालय

आंखें खुली हों तो पूरा जीवन ही विश्वविद्यालय है। जीवन का हर क्षण स्वयं में विश्व की कोई न कोई विद्या समेटे है और फिर जिसे सीखने की ललक है, वह प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक घटना से सीख लेता है। प्रकृति के आंगन में हो रही हर हलचल उसे कोई न कोई नई सीख देती है। याद रहे कि जो इस तरह नहीं सीखता है, वह जीवन में कभी कुछ नहीं सीख पाता। महान वैज्ञानिक आइस्टीन कहा करते थे- **''हर व्यक्ति, जिससे मैं मिलता हूं, किसी न किसी बात में मुझसे श्रेष्ठ है। वहीं मैं उससे सीखने की कोशिश करता हूं।''**

उन्हीं के जीवन का एक प्रसंग है। वे किसी दूसरे देश में एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में गए हुए थे। इस विश्वविद्यालय ने उनके लिए एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया था। उन्हें सुनने के लिए विभिन्न विषयों के विद्वान, राजनेता, उच्च पदाधिकारी सभी पधारे थे। एक दिन सायं वे अपने व्याख्यान को समाप्त कर घूमने के लिए निकले। राह में उन्होंने देखा कि एक कुम्हार मिट्टी के बरतन बना रहा था। उस कुम्हार की कारीगरी उन्हें विलक्षण लगी। जीवन और जगत के स्रष्टा की भांति वह भी एक नवीन सृष्टि गढ़ रहा था। आइन्स्टीन काफी देर तक खड़े रहकर उसका वह कौशल देखते रहे।

फिर उन्होंने उससे कहा- ''ईश्वर की खातिर मुझे भी अपना बनाया हुआ बरतन देंगे क्या?'' उनके मुख से ईश्वर का नाम सुनकर वह कुम्हार चौका। फिर उसके ओंठों पर एक हलकी-सी मुस्कान उभरी। उसने अपने हाथ में लिया हुआ काम छोड़ दिया और अपने बनाये हुए बरतनों में से एक सबसे सुंदर बरतन उठाया। उसे साफ करके बड़े ही सुंदर ढंग से उसने आइन्स्टीन के हाथों थमाया। कुम्हार का दिया बरतन अपने हाथों में लेने के बाद उन महान वैज्ञानिक ने उसे देने के लिए पैसे निकाले परन्तु उस कुम्हार ने उन पैसों से लेने से इन्कार करते हुए कहा- ''महोदय! आपने तो ईश्वर की खातिर बरतन देने को कहा था, पैसों की खातिर नहीं।'' आइन्स्टीन अपनी मित्रमंडली में हमेशा इस घटना का जिक्र करते हुए कहते थे- ''जो मैं कभी किसी विश्वविद्यालय में नहीं सीख सका, वह मुझे उस कुम्हार ने सिखा दिया। मैंने उससे निष्काम ईश्वर भक्ति सीखी।'' भला जीवन से बड़ा विश्वविद्यालय और कहां!

सफ ल कौन ?

सफलता क्या है ? सफल कौन है ? ये महाप्रश्न सबके जीवन में उठते हैं । सभी अपने-अपने ढंग से इनको हल करते हैं और अपने उद्देश्य के अनुरुप आगे बढ़ते हैं । सफलता जीवन से जुड़ा एक अहम विषय है । सभी इसके अनुभव के स्वाद से परिचित है । सफलता अच्छी लगती है और असफलता असह्य । वस्तुतः यह आखिर है क्या ? जिसे करने में जीवन सार्थक महसूस होता है,''वह सफलता है और जिसका जीवन सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण है, वही सफ ल है ।'' हमारी सोच, हमारी मानसिक एवं भावनात्मक क्षमता तथा हमारी बौद्धिक कुशलता ही हमें सफल बनाती है। इसके अभाव में हमें असफलता हाथ लगती है।

सफलता की उपलब्धि कार्य का अंतिम सोपान है, परन्तु इस उपलब्धि को पाने के लिए, सफल बनने के लिए हमें किस डगर से गुजरना है ? वह कौन-सी चीज है, जो हमें सफलता के शिखर पर आरुढ़ करती है और इसके लिये हमें कहां से प्रारंभ करना चाहिये ? इन तमाम प्रश्नों के उत्तर में ही सफलता निहित है। यदि इस तकनीक का ज्ञान न हो तो हम सफलता से मीलों दूर रह जाएंगे और असफलता के हाथों की कठपुतली बने रहेंगे । सफ लता के सूत्रधार स्वामी विवेकानंद कहते हैं- ''हर व्यक्ति के अंदर एक नैसर्गिक क्षमता छिपी होती है, एक मौलिक प्रतिभा ढंकी होती है। यदि इसे सही ढंग से पहचान लिया जाए एवं इसके विकास के लिए समुचित प्रयत्न किया जाए तो अनेकों उपलब्धियों को पाया जा सकता है।''

सफलता का प्रथम सूत्र है, अपने स्वयं की क्षमता को पहचानना। हम क्या कर सकते हैं, इसका सूक्ष्म विश्लेषण करना । निराशा के घटाटोप में कभी-कभी यह प्रश्न खो जाता है और हम यह नहीं समझ पाते कि हम भी कुछ कर सकते हैं। उद्विग्न मनः स्थिति हमें और भी असहाय बनाती है । अतः इसे शांत मन से सोचना चाहिये । जिससे हमारी अभिरुचि हो तथा जिसे करने में प्रसन्नता का एहसास होता हो वही हमारा स्वधर्म है। गीता में इस स्वधर्म को श्रेयस्कर मानकर जीवन में इसी को अपनाने का उपदेश दिया गया है। इस सृष्टि में हर व्यक्ति की एक विशिष्टता है, हरेक की एक खासियत है, उसी खासियत और विशेषता को पहचानकर आगे बढ़ना चाहिये। किसी की बौद्धिक क्षमता तीव्र होती है तो किसी की तर्कशक्ति अकाट्य होती है,कोई शरीर से शक्ति शाली होता है तो कोई भावना में इतना उदार एवं उदात्त होता है कि पलभर में सबको अपना बना लेता है। हमारी अभिरुचि और क्षमता क्या है,उसी का चुनाव करना चाहिए।

मानव परमात्मा का अविनाशी अंश है। उसमें परमात्मा की समस्त संभावनाएं सन्निहित होती है,परन्तु इन संभावनाओं में सबसे नजदीक हम कहां हैं, उसी का विकास सफलता का सूत्र है। कुछ जन्मजात प्रतिभावान होते हैं। बुद्ध शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद, रामतीर्थ, एकनाथ, भीष्म अर्जुन आदि भगवत् प्रदत्त विभूतियों को साथ लेकर इस धरती पर अवतरित होते हैं। इनका जीवन ही सफलता का पर्याय एवं प्रतीक होता है परन्तु यह भी सच है कि संभावनाओं को तलाश और तराश कर भी प्रतिभा सम्पन्न बना जा सकता है। गांधीजी जन्मजात प्रतिभाशाली नहीं थे परन्तु उनकी अर्जित प्रतिभा के सामने सारा देश नतमस्तक हुआ। चाणक्य ने ग्रामीण बालक चंद्रगुप्त की प्रतिभा को तराशा और उसे अखंड भारत का चक्रवर्ती सम्राट बना दिया। ऐसे जीवंत प्रतिमानों से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं । हमें भी अपनी संभावनाओं की तलाश करनी चाहिए, उसे सतत विकसित करते रहना चाहिए।

कभी-कभी प्रखर बीज भी जमीन में सड़-गल जाता है तथा कुशल माली के संपर्क में औसत बीज भी प्रखर बीज के समान वृक्ष की समस्त संभावनाओं को साकार कर दिखाता है, पर इस सभी के लिए बीज को गलना पड़ता है। सफलता की राह में हमें भी हर परिस्थितियों का मुकाबला कर आगे बढ़ना होगा। शारीरिक क्षेत्र में प्रतिभा हो तो खिलाड़ी बना जा सकता है। बौद्धिक क्षमता चिंतक, विचारक और लेखक बनाती है । तार्किक क्षमता से समालोचकी शक्ति तथा भावनात्मक क्षमता से आध्यात्मिकता पाई जा सकती है। अपने क्षेत्र में इन सभी प्रतिभाशाली लोगों ने सफलता की बुलंदियों को छुआ था परन्तु क्या इन सभी को सफल कहा जा सकता है ? अगर नहीं तो क्यों ? इसके जवाब में उनमें निहित उद्देश्य एवं लक्ष्य को प्रमुख माना जाता है। यदि कोई अपने ही स्वार्थ के लिए अपनी प्रतिभा का उपयोग करता है, वह स्वहित तक सीमित रहता है, उसकी सफ लता प्रसंशनीय और वास्तविक नहीं है परन्तु स्वार्थ एवं अहंकार

से परे जितने भी अपनी प्रतिभा को दान किया, वे आज भी सितारों के समान चमकते हैं। उन्हें आज भी आदर के साथ याद किया जाता है। सही मायने में वे ही सफल हैं।

श्रीमहावीर की सफलता राज्य संभालने में नहीं, बल्कि आत्मत्व की प्राप्ति में थी। श्रीमहावीर के चरणों में मगध सम्राट बिंबसार झुकते थे। तब मगध सम्राट भारत के सभी सम्राटों से अधिक शक्तिशाली एवं सम्मानित माने जाते थे। श्रीमहावीर सम्राट नहीं थे पर उनके सामने सम्राटों के सिंहासन डोलते थे। श्रीमहावीर ने अपने जीवन की सफलता आत्मत्व की उपलब्धि में पाई। उन्हें जीवन के सभी राग-रंगों, एश्वर्य-भोगों को छोड़ने का कभी मलाल नहीं हुआ, इनके त्याग में ही जीवन की सार्थकता का अनुभव किया। आई.सी.एस. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के समीप आ जाने के बावजूद श्री अरविंद ने देश सेवा एवं अंत में अध्यात्म को चुना। उनके जीवन का उद्देश्य ही यही था। अतः वे सफल थे,सफलता के पर्याय थे।

उद्देश्यपूर्ण जीवन की असफलता भी सफलता से श्रेयकर है। सच कहें तो वहां असफलता है ही नहीं, परन्तु स्वार्थ एवं अहं से प्रेरित सफलता का जीवन में कोई मूल्य नहीं है, भले ही समाज इसका कितना ही मूल्य आंके। समाज में सफल कहे जाने वाले बहु-उद्देश्यीय कंपनियों के मैनेजरों एवं कार्पोरेट जगत के उच्च पदाधिकारियों का निजी जीवन कितना तनावपूर्ण है, कौन नहीं जानता! ग्लैमर की दुनिया के सितारे माने-जानेवालों की कहानी भी किसी से छिपी नहीं है। चमक-दमक से भरे पर उद्विग्न-उदास, हैरानी-परेशानी भरी जिंदगी जीनेवालों को भला कौन सफल कहेगा!

इस नजरिए से देखा जाए तो ये जीवन के सच्चे उद्देश्य के मामलों में निरे असफल व्यक्ति है क्योंकि जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है, जीवन में सार्थकता, संतोष का अनुभव करना।

सफलता शब्द का अर्थ है- मानवीय चेतना का उत्तरोत्तर विकास। मानव में यह विकास मानसिक और आध्यात्मिक चेतना का होता है। अतः हर वह कार्य एवं व्यवसाय, जो इनके विकास में सहयोगी हो तथा अपनी अभिरुचि के अनुकूल हो, सफलता के दायरे में आता है। जीवन के सच्चे उद्देश्य के लिए अपनी क्षमताओं का जागरण एवं इनका उपयोग ही सच्ची सफलता है।

अतः अपनी क्षमताओं का भरपूर उपयोग करना चाहिए, जिससे कि औरों को लाभ हो एवं स्वयं को संतोष। जिस कार्य को करने से मन प्रसन्न होता है, हृदय को सुकून मिलता है, उससे औरों को भी लाभ मिलता है क्योंकि प्रसन्नता देने वाला यह कार्य स्वार्थ एवं अहं से हटकर होता है। यही सच्ची सफलता है। अपने जीवन में अपनी क्षमताओं को पहचान कर तथा उद्देश्यपूर्ण ढंग से इनका उपयोग करते हुए सफल जीवन जीने का प्रयास करना चाहिये।

सबसे बड़ी गलती

बेंजामिन फ्रैंकलिन की ओर अपनी नोटबुक बढ़ाकर एक आदमी ने उनके कुछ नसीहत की बात लिख देने का अनुरोध किया। फ्रैंकलिन ने लिखा- ''वह आदमी, जो कुछ न कुछ करता रहता है, बहुत सी गलतियां कर देता है, लेकिन वह सबसे बड़ी गलती कभी नहीं करता, जो है- निठल्ले बैठे रहना या कुछ भी नहीं करना।''

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नाम:- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाता:- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

THE HINDU Newspaper के वरिष्ठ पत्रकार वाय.नटराजन के जैनियों के बारे में लेख का हिंदी भावानुवाद...

✻ 2022 से 2025 के मध्य देश के 17 प्रतिशत उच्चाधिकारी (IAS आदि) जैन होंगे, जिन्हें 9 जैन संस्थाएं तैयार कर रही है।

✻ अगर आप सोश्यल मीडिया सर्च कर रहे हैं और किसी पेज पर अन्याय या सरकार विरोधी कोई भी शिकायत नहीं हो और मात्र धर्म तथा विकास की ही बात हो तो इसका अर्थ यह समझना कि आप जैन समाज की किसी संस्था के पेज पर हो।

✻ इस समाज के पास कोई कन्हैया कुमार या हार्दिक पटेल नहीं है। यह समाज भारत में पारसियों के बाद का, सबसे अल्पसंख्यक समाज है परन्तु किसी भी प्रकार के अन्याय पर असुरक्षा का भाव नहीं। सभी सरकार और नेताओं के साथ अच्छे संबंध है। मांगते नहीं पर काम निकलवाना आता है, वह भी सामने वाले के पूरे सम्मान को ध्यान में रखकर।

✻ धर्म का प्रभाव पाजिटिव है। क्षमा करने का गुण इतना जबरदस्त आत्मसात है कि कभी भी किसी को नुकसान पहुंचाते नहीं है।

✻ राणा प्रताप की भामाशाह बनकर सहायता करते है फिर भी नेता तो राणा को ही रखते हैं।

✻ सैनिक फण्ड में भारत में सबसे अधिक दान श्रवण बेलगोला के बाहुबली संस्थान द्वारा रुपये 100 करोड़ का दान है।

✻ संपत्ति उपयोग के चार प्रकार है- बताना, उड़ाना, वापरना और उगाना। यह चारों प्रकार जैन सेठों को आत्मसात है।

✻ अन्य समाज की संस्थाओं में थोड़े ही समय में विभाजन होते देखा होगा पर जैन ट्रस्टों में तीव्र वैचारिक मतभेद, मीटिंग में लंबी-लंबी चर्चाएं होना, समधी समधी आमाने-सामने आ जाते है परन्तु मीटिंग पूरी बात पूरी। वैर विरोधी कड़्वाहट कुछ भी नहीं होता, कोर्ट केस तो बहुत दूर की बात है। सम्मेत शिखर तीर्थ अपवाद है लेकिन उसमें भी आयोजन यह है कि श्वेतांबर दिगंबर संघर्ष करते रहे परन्तु पर्वत सरकार के हाथ में नहीं देना।

✻ जितो, जीओ, जीत, तेरापंथ युवक परिषद, दिगंबर महासभा जैसी संस्थाएं जैन युवकों को आई.ए.एस. बनाने के लिये कार्य कर रही है। जिसके अद्भूत परिणाम आने लगे हैं।

✻ मंदिरों और उत्सवों से एक वर्ग शिक्षण और हॉस्पिटल की ओर चल पड़ा है तो अनेक युवा शिक्षण से शासन की ओर प्रेरित होकर दीक्षा ले रहे हैं।

✻ अहमदाबाद में 25 करोड़ की लागत से महावीर जैन विद्यालय बन रहा है। बैंगलोर और पूना के जैन हॉस्टल देखकर तो आपको यूरोपियन हॉस्टल में घूम रहे हो, ऐसा आभास होगा।

✻ अब धर्म के साथ एज्युकेशन और डेवलपमेंट की बात करने वाले जैन संत ही युवाओं में लोकप्रिय है। जैन युवा बहुत शीघ्रता से पंथवाद को भूल रहा है।

✻ आजकल कितने ही असामाजिक तत्व सोश्यल मीडिया पर किसी समाज या देवी-देवताओं के विषय में लिखते है तो उस समाज के अग्रणी भीड़ इकटठी कर समय और शक्ति का बिगाड़ कर उसे हीरो बनाते हैं। ऐसे तत्वों को नजरअंदाज करना कोई जैन समाज से सीखें। जबकि राजस्थान, हरियाणा, उत्तर गुजरात में अनोप मंडल नामक संस्था जैन समाज के लिए अनाप-शनाप लिखती है परन्तु जैन समाज ने इसे नजरअंदाज ही किया है।

✻ एक ओर रैली निकाले बिना, वोट बैंक का आधार लिए बिना, एक भी धरना या उपवास के बिना, मात्र एक कम्प्यूटर और प्रिंटर के माध्यम से अल्पसंख्यक का दर्जा प्राप्त कर लिया। किसी को ईर्ष्या न हो इसलिए किसी भी प्रकार का कोई आयोजन भी नहीं किया। इस प्रकार देश के हजारों शिक्षण संस्थानों और जैन मंदिरों को सुरक्षित कर लिया। आज सरकार ने शिरडी सांई बाबा, सिद्धि विनायक मंदिर, मुंबई, अंबाजी मंदिर गुजरात की व्यवस्था और प्रबंधन अपने हाथ में ले रखी है परन्तु कायदानुसार श्रवणबेलगोला कर्नाटक या गुजरात के पालीताना की व्यवस्था और प्रबंधन अपने हाथ में नहीं ले सके।

✻ आज जो भी समाज आरक्षण के पीछे भाग रही है उन्हें जैन समाज से विशेष प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। भीड़ इकट्ठी कर रेलवे, बसे जलाने वाले लोगों के बीच देश की सवा सौ करोड़ की जनसंख्या में एक प्रतिशत से भी कम जनसंख्या वाला यह समाज पिछले 2500 से भी अधिक वर्षो से स्वयं को प्रथम पंक्ति में रखने में सक्षम रहा है, यह भी धर्म संस्कार की उपज है।

तस्वीर दिल्ली के टैक्सी चालक देवेन्द्र की है * मोबाईल से

देवेन्द्र मूलतः बिहार के रहनेवाला है। एक दिन देवेन्द्र की टैक्सी में काश्मीर का निवासी बैठा जिसे एयरपोर्ट से पहाड़गंज तक जाना था। देवेन्द्र ने उसको पहाड़गंज छोड़ा, अपना किराया वसूला और वापिस टैक्सी स्टेण्ड की ओर चल पड़े। इसी बीच उनकी नजर गाड़ी में पड़े एक बैग पर गयी। बैग को देखकर देवेन्द्र समझ गए कि यह उसी सवारी का बैग है, जिसे कुछ ही समय पहले वह पहाड़गंज छोड़कर आये है। बैग को खोलकर देखा तो उसमें कुछ स्वर्ण आभूषण, एक एप्पल का लैपटॉप, एक कैमरा और कुछ नगद पैसे थे। सब कुछ मिला के लगभग 7 या 8 लाख का सामान था।

एकदम देवेन्द्र की आंखों के सामने अपनी टैक्सी के फाइनेन्सर की तस्वीर आ गई। इतने आभूषण बेच कर तो उनकी टैक्सी का कर्ज आसानी से उतर सकता था। एक दम से प्रसन्न हो उठे। उनके मन में बैठा रावण जाग उठा। पराया माल अपना लगने लगा परन्तु जीवन की यही तो विडम्बना है। मन में राम और रावण दोनों ही निवास करते हैं। कुछ ही दूर गये थे के मन में बैठे राम जाग उठे। देवेन्द्र को लगा के वह कैसा पाप करने जा रहे थे। नैतिकता आड़े आ गयी। बड़ी दुविधा थी। एक ओर आभूषण सामने पड़ेथे और दूसरी ओर अपनी अंतरात्मा खुद को ही धिक्कार रही थी।

कुछ देर द्वंद चला पर अंत में विजय राम की ही हुई। देवेन्द्र पास के पुलिस स्टेशन गये और बैग ड्यूटी पर मौजूद थानेदार के हाथ में थमा दिया। अब थानेदार कभी बैग में पड़े आभूषण देखे और कभी ड्राईवर का चेहरा देखे। थानेदार ने कहाकि- तू अगर चाहता तो यह बैग लेकर भाग सकता था। देवेन्द्र ने जवाब दिया- **''साहब ! हम ''गरीब''** है, पर **''बेईमान''** नहीं है।'' थानेदार भी निःशब्द हो गये। उन्हें लगा कि ड्राइवर सच में गरीब तो है किन्तु ईमानदार है। खैर सवारी को उसका बैग सकुशल वापिस मिल गया। देवेन्द्र की ईमानदारी के इनाम के रुप में मालिक ने उसे कुछ रुपये देने की पेशकश की तो देवेन्द्र ने साफ मना कर दिया।

असली कथा आगे शुरु होती है-

थानेदार ने देवेन्द्र की ईमानदारी की गाथा एक मीडियाकर्मी को सुना दी। मीडियाकर्मी भी थानेदार की तरह प्रभावित हो गया। उसने इस ईमानदारी की खबर अखबार में छापने की ठान ली। वह देवेन्द्र से मिला और उसका साक्षात्कार लेते हुए पूछा- ''अगर बैग में पड़े सामान की कीमत (8 लाख रुपये) उसे मिल जायें तो वह क्या करेगा।'' देवेन्द्र ने कहा कि पहले तो फाइनेन्सर का कर्जा चुकाएगा और फिर अगर संभव हुआ तो एक टैक्सी खरीदेगा।

रिपोर्टर ने कहा कि- तेरे सर पर कर्ज है तो तू बैग लेकर भाग क्यों नहीं गया ? देवेन्द्र ने रिपोर्टर से भी यही कहा कि - साहब, हम गरीब है पर बेईमान नहीं है। थानेदार की तरह अब रिपोर्टर भी प्रभावित हुआ। रिपोर्टर ने उसकी ईमानदारी की गाथा एफ एम चैनल के एक रेडियो जॉकी को बताई। एफ एम रेड़ियों के जरिए देवेन्द्र की कहानी दिल्लीवासियों को सुना दी गई.... साथ ही साथ दिल्लीवालों को देवेन्द्र के कर्ज के विषय में भी बताया गया। इसी के साथ देवेन्द्र का एक बैंक खाता नंबर भी दिया गया, जिसमें धनराशि डाल कर वह ईमानदार देवेन्द्र का कर्ज उतारने में उसकी मदद कर सकते थे।

केवल 2 घंटे बाद ही.... मात्र 120 मिनट में दिल्ली के देवेन्द्र के खाते में 91,751/- रुपये डलवा दिये और 8 लाख रुपये मिल गए मात्र 2 दिन में।

सबने अपनी हैसियत के हिसाब से पैसा दिया। दिलवालों की दिल्ली ने देवेन्द्र की ईमानदारी के उपहार में उसे ऋण मुक्त कर दिया। लाखों लोगों ने उसकी ईमानदारी को सराहा....

देवेन्द्र आज भी कहते है कि- **मन के रावण को राम पर हावी ना होने देना उनके जीवन की सबसे बड़ी जीत थी।** अगर वह बैग लेकर भाग जाते तो कर्जा तो उतार लेते पर खुद को कभी माफ नहीं कर पाते।

यह सच सिद्ध हो गया कि- **मन में बैठा रावण आज की व्यवस्था में हावी है परन्तु मन में बैठे राम आज भी दशानन का वध करने में सक्षम है। अच्छाई और बुराई में आज भी धागे भर का फासला है। इस ओर गये तो राम और उस ओर गये तो रावण।**

गरीब ड्राईवर देवेन्द्र ने दिल की सुनी और दिमाग के तर्क को नकार दिया, **अपने संस्कार से सिद्ध किया कि किसी और के परिश्रम से अर्जित धन को हड़पने से धन नहीं आता। ईमानदारी ही जीवन को सुखी और समृद्ध बनाती है।**

वर्ग पहेली क्रमांक-*333*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	■	2	■	3	4		5	■
6	7		8	■		■	9	10
■		■	11	12		■	■	
13		14	■		■	15		
	■	16					■	
17		■	■		■	18	19	■
	■	■	20		21	■		■
22	23	■		■	24	25		26
■	27				■		■	

बाएं से दाएं:-

3- माता त्रिशला का ही एक नाम प्रि--- (4)

6- भोपाल की इस घाटी पर जैन मंदिर स्थित है (4)

9- भ.श्रेयांसनाथ के सम्यक्त्व प्राप्ति पश्चात भव की संख्या--- (2)

11-तीर्थंकर सुविधिनाथ प्रभु का च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान स्थल---(3)

13-महावीर जन्म कल्याणक के वरघोड़े में बोला जाने वाला नाराः वंदे--- (3)

15-इक्कीसवें तीर्थंकर भ.नमिनाथ के पांचों कल्याणक के समय यह नक्षत्र था (3)

16-शंखेश्वर के निकट भगवान चंदप्रभ का तीर्थ (5)

17-मातंग नाम है भगवान महावीर के--- का (2)

18-न्यायाधीश के लिए अंग्रेजी भाषा का शब्द--(2)

20-शत्रुंजय तीर्थ की यात्रा करते, पहाड़ पर चढ़ते-चढ़ते सब मिल बोले जय जय---थ (3)

22-भगवान महावीर को ऋजुबालुका--- के किनारे केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई थी (2)

24-आठवें तीर्थंकर भगवान के पिता का नाम---(4)

27-फालना के निकट, गोड़वाड़ पंचतीर्थ का पार्श्वनाथ प्रभु का तीर्थ --- (4)

वर्ग पहेली क्रमांक-332 का परिणाम

च	■	प्र	■	ने	म	प्र	भ	■
द्ध	प्र	भा	स	■	ग	■	व	ही
■	या	■	वा	न	र	■	■	र
आ	ग	म	■	न्दि	■	श	■	वि
का	■	चू	ल	नी	पि	ता	■	ज
श	ह	र	■	पि	■	■	क्षा	य
गा	■	■	ज	ता	र	■	त्रि	■
मि	त्रा	■	हां	■	वि	ज	य	से
■	स	क	डा	ल	■	या	■	ना

ऊपर से नीचे:-

1- तीर्थंकर महावीरक प्रभु का वर्ण--- (2)

2- रजोहरण का अन्य नाम--- (2)

4- यमुना नदी इस नाम से भी जानी जाती है---(3)

5- जोधपुर के निकट चिन्तामणि पार्श्वनाथ का तीर्थ गांगा---र्थ (1,1)

7- मेरे दोनों हाथों में ऐसी--- है,
दादा से मिलन होगा मेरी तकदीर है (3)

8- तिलक का पर्यायवाची शब्द---(2)

10-राणकपुर तीर्थ की संरचना---ल्म विमान जैसी है (4)

12-श्री सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित एक स्तोत्र का नाम---र (3,2)

सच्चा स्वरुप....

थोड़ा-सा सम्मान मिला, पागल हो गये,
थोड़ा सा ज्ञान मिला, उपदेश की भाषा सीखली,
थोड़ा सा यश मिला, दुनिया पर हंसने लगे,
थोड़ा सा रुप मिला, दर्पण ही तोड़ डाला,
थोड़ा सा अधिकार मिला, दूसरों को तबाह कर दिया,
इस प्रकार तमाम उम्र चलनी से पानी भरते रहे !
अपनी समझ से, बहुत बड़ा काम करते रहे !!

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-333

☀ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर सिर्फ हाँ या ना में दें ?

1- ब्राह्मी एवं सुंदरी दोनों एक ही माँ की बेटी थी ?

2- रामचंद्रजी की आत्मा अभी मोक्ष में है ?

3- अरिहंत प्रभु एवं सामान्य केवली का ज्ञान समान होता है ?

4- तला हुआ पापड़ दूसरे दिन वापर सकते हैं ?

5- पर्युषणा के आठ दिन कल्पसूत्र का वांचन किया जाता है ?

6- देवता बूढ़ेहोते है ?

7- देवताओं को दाढ़ी-मूंछ होते है ?

8- बियासणा ब्राह्य तप में आता है ?

9- सूर्य चंद्र अचल भी होते है ?

10- आड़ो कर्म के क्षय से केवलज्ञान होता है ?

11- तीर्थंकर नामकर्म की निकाचना देव भव में ही होती है ?

संकट में कूद पड़ो...!

मोती सतह पर मिलते नहीं। सूर्यकांत मणि अंधेरे में चमकता नहीं। चकमक पत्थर कोमल वस्तु के घर्षण से चिनगारी फेंकता नहीं। सफलता सरलता से मिलती नहीं। घोर संकट में कूद पड़ो। निष्फलता से डरो मत। अन्याय से पिसे हुए मन को बैचेन होने दो। तभी तुम्हारे अंदर आग पैदा होगी।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-2-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-332 के परिणाम

सही उत्तर-

1- श्रीयक-यक्षा, 2- अभयकुमार-आर्द्रकुमार 3- सुदर्शना-नंदिवर्धन, 4- मणीरथ-युगबाहु, 5- वज्र-बाहु-उदयसुंदर, 6- लक्ष्मणजी-सीता, 7- राजिमति-रहनेमि, 8- ब्रह्मदत्त-चुलनी, 9- मदनरेखा-युगबाहु, 10- महावीरस्वामी-गौतमस्वामी, 11-मृगावती-चंदनबाला।

नोटः- वर्गपहले क्रमांक 332 तथा ज्ञानगंगोत्री क्रमांक 332 के परिणाम अगले अंक मार्च में विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जाएंगे।

परिवर्तन प्रगति का सूचक है

हथेली पर सरसों उगाने के क्षणिक प्रयास में शक्ति क्षरण मत करो, अपितु सतत परिश्रमशील बनो। निरन्तर श्रम के आराधक बनो तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण रखो। नये परिवर्तनों से घबराओ मत। बदलाव आने दो। गर्मी के पश्चात वर्षा का आना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। यह प्रकृति का नियम है। परिश्रम हमेशा परिवर्तन को जन्म देता है। श्रमविमुख कुण्ठा नये आयाम खोलने में सदा से असमर्थ रही है। उर्वरा भूमि में डाला गया बीज यदि परिश्रम के जल से सिंचित न हो, तो क्या कुछ उपलब्धियां दे सकता है वह ? क्या फसल मिल सकती हैं ? क्या खेती लहलहा सकती हैं ? क्या फूल खिल सकते हैं ? उत्तर होगा, नहीं। गति-प्रगति के लिए बीज को टूटना ही होगा। अपने आप में परिवर्तन लाना ही होगा। तभी वह प्रस्फुटित एवं अंकुरित हो सकेगा। उसका यह विस्फोटक रुप ही उसके जीवित होने का परिचायक होगा। इसलिए परिवर्तनों से घबराओ मत ! कुण्ठाओं को जीवन में स्थान मत दो। नये आयाम खुलने दो। नये मोड़ आने दो। यह परिवर्तन ही प्रगति का सूचकांक होगा।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

श्री सिद्धाचल से सिद्धगिरी छ:रि पालित संघ की पूर्णाहुति के बाद युवा जैनाचार्यश्री के नाम से साधु-साध्वीजी को समर्पित विश्वरत्नधाम का भूमि पूजन हुआ

✻ 22जनवरी को महामांगलिक पालीताना मे हुई। 19 से 23 जनवरी को श्री सिद्धाचल छ:रि पालित संघ।✻ पालीताना में एक ओर धर्मशाला बनेगी।✻ मध्यप्रदेश-राजस्थान के संघों में अनेक आयोजन। अंजन प्रतिष्ठा-दीक्षा में निश्रा रहेगी। ✻ अनेक प्रांतों से चार्तुमास की विनंती मुबई में हो सकता है अगला चार्तुमास। ✻ गुरु मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव प्रतापगढ़ में होगा।

पालीताना-सूरत में स्थानकवासी संघ के तत्वावधान में महामांगलिक सम्पन्न कर जैन एकता का अभूतपूर्व परिचय देनेवालेगुरु नवरत्नसागर सूरीजी सूरत एवं सागर समुदाय का नाम धर्म क्षेत्र में शिखर पर पहुंचाने के बाद शासन प्रभावक कार्यो से पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यभगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के नाम को रोशन करने वाले अपने युवा शिष्यों मंडली के साथ जिन शासन को शोभायमान करने वाले गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवाहृदय सम्राट, महा मांगलिक प्रदाता परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा.एवं युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थरत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्रीउज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्री,प.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म. सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्न सागर जी म. सा.मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्न सागरजी म.सा.मुनिश्री सिध्दरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा पालीताना पहुंच गये है। कुछ मुनि भगवंत आगम शासन प्रभावक कार्यों की व्यवस्था को अंतिम रुप देने के लिये श्री सिद्धाचल महातीर्थ पहले ही पहुंच गया थे। यहां से आपश्री की निश्रा में श्री सिद्धाचल से सिद्धगिरी की 12 गांव की यात्रा का छःरिपालित संघ का प्रयाण 18 जनवरी को प्रातःकाल धूमधाम से हुआ। संघ का समापन 22 जनवरी को होगा। 23 जनवरी को संघ की माल होगी। दिनांक 22 जनवरी को नवरत्न धाम में आपश्री महामांगलिक का आयोजन भी जोरदार रहा । दिनांक 5 फरवरी को श्री केशरियाजी जिन मंदिर के पीछे भव्य धर्मशाला के निर्माण के लिये भूमि पूजन सम्पन्न होगा। यहां पूज्य साधु-साध्वी भगवंतों के स्थिरता की सुन्दर व्यवस्था करनेवाले कमरों, हॉल का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। सभी समुदाय के साधु-साध्वीजी के ठहरने की यहां व्यवस्था रहेगी । इस आयोजन के उपरांत मध्यप्रदेश की ओर विहार होगा । शिवगढ़ में 22 फरवरी को प्रतिष्ठा महोत्सव निश्रा के बाद अंजन प्रतिष्ठा के साथ तनोड़िया में प्रतिष्ठा महोत्सव दीक्षा आदि जिन शासन कार्यों में निश्रा दाता रहेंगे । महोत्सव 3 मार्च को आयोजित है। इसके बाद प्रतापगढ़ में गुरुदेव का 80 वां जन्मदिन 10 मार्च को मनाने के साथ 12 मार्च को प्रतिष्ठा होगी। यहां से जोधपुर 108 पार्श्वचंदन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 3 मई को है। दिनांक 12 मई को बांद्रा में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा रहेगी। विहार यात्रा में अनेक श्रीसंघों, नगरों में विविध शासन प्रभावक कार्य भी होंगे। अनेक स्थानों की विभिन्न प्रांतों से आगामी चार्तुमास की विनंति है। इसकी घोषणा मार्च-अप्रेल में हो सकती है । अन्य कार्यक्रमों की रुपरेखा बन रही है। मुंबई में भी पुनः आगामी चार्तुमास की विनंती है।

परम पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरी जी म. सा. आगामी संभावित आयोजनः-

✻ 22 जनवरी को पालीताना महातीर्थ में नवरत्नधाम में महामांगलिक।
✻ पालीताना महातीर्थ में 5 दिवसीय छःरि पालित संघ- 23 जनवरी 2023 तक।
✻ श्री पालीताना महातीर्थ में नवनिर्मित नवरत्नधाम के सामने केशरियाजी के पास स्थित विशाल भूखाण्ड पर भव्य धर्मशाला निर्माण हेतु भूमि पूजन 05 फरवरी 2023, रविवार।
✻ पालीताना महातीर्थ से मध्यप्रदेश की ओर विहार यात्रा।
✻ शिवगढ़ नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव-22 फरवरी 2023।
✻ तनोड़िया नगर में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव- 3 मार्च 2023।
✻ प्रतापगढ़ नगर में परम पूज्य आचार्यदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. का 80 वां जन्म महोत्सव- दिनांक 10 मार्च 2023।
✻ प्रतापगढ़ नगर में पोरवालो का मंदिर में भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 12 मार्च 2023।
✻ सूर्यनगरी जोधपुर के समीप स्थित 109 पार्श्वचंदन प्रभावती मंदिर में 109 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाओं की भव्य अंजनशलाका प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव- दिनांक 3 मई 2023।
✻ हाड़ौति क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय धर्मानुरागी राजस्थान केबिनेट मिनिस्टर श्री प्रमोद जैन भाया के द्वारा बारा नगर में निर्मित भव्य जिनालय की प्राण प्रतिष्ठा अंजनशलाका महोत्सव में निश्रा उपस्थिति- दिनांक 23 मई 2023।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी मालवा के श्री संघों की प्रदक्षणा देते हुए भोपावर महातीर्थ पधारेंगे

✻ मुनिश्री अक्षतरत्नसागरजी को गणि पदवी दी जायेगी।
✻ पंच दिवसीय आयोजन में अंजनशलाका भी होगी।

उज्जैन- पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा राजस्थान से विहार करते हुए मालवा के श्री संघों में पधारे अनेक श्री संघों में परायण करते हुए बड़ौद पधारे जहां दिनांक 22 जनवरी को महामांगलिक का आयोजन हुआ वहां से महिदपुर पधारे जहां आपकी प्रेरणा से वर्षीतपाराधना चल रही है यहां से विभिन्न संघों में जिनशासन प्रभावना करते हुए उज्जैन पधारे। यहां से आपका विहार आगे अन्य संघों से होते हुए भोपावर महातीर्थ की ओर हुआ। यहां आपकी की निश्रा मे मुनिपुंग शतायधानी श्री अक्षतरत्नसागरजी म.सा. का गणिपद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। भोपावर महातीर्थ में श्री शांतिनाथ प्रभु की तृतीय वर्षगांठ के शुभ प्रसंग पर आपको गणि पद प्रदान किया जायेगा इसके साथ ही भोपाल में मार्च में होनेवाले प्रतिष्ठा महोत्सव में विराजित होने वाले परमात्मा की अंजन शलाका भी इस प्रसंग पर होने जा रही है।

चार्तुमास- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभविजयजी म.सा. का वर्ष 2023 **का चार्तुमास ईटला जैन संघ मुंबई में होगा।**

साध्वी श्री सूर्यकांता श्रीजी की स्मृति में त्रिदिवसीय आयोजन

उज्जैन- सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री सूर्यकान्ता श्रीजी म.सा. के देवलोक गमन निमित्त त्रिदिवसीय जिनभक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर आयोजित महोत्सव में आचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी, पंन्यास अचलमुक्ति सागर जी म.सा. के साथ साध्वी श्री दमिताश्रीजी, श्री शीलरेखा श्रीजी, चन्द्ररत्नाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 31 दिसंबर को पार्श्वपंच कल्याणक पूजन 1 जनवरी को गुणानुवाद सभा तथा 2 जनवरी को श्री भक्तामर महापूजन का आयोजन किया गया।

वरिष्ठतम जैनाचार्य श्री नंदीवर्धनसूरीजी के 90 वें जन्मदिवस पर 21 दिवसीय आयोजन

पूना- सागर समुदाय के वरिष्ठ-तम जैनाचार्य श्री नंदीर्धनसागरसूरीजी महाराज 90 वर्ष की वय को प्राप्त कर रहे है। आपकी अनुमोदनार्थ संपूर्ण भारत के जैन संघों में 21 दिवसीय जिन भक्ति गुरुभक्ति आयोजन किया जायेग। पूज्यपाद अज्ञात शत्रु आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी म.सा. के 90 वें जन्म दिवस पर 90 जिनालयों में 18 अभिषेक, महाराष्ट्रकी 90 पाठशाला के शिक्षकों का बहुमान, 900 साधर्मिक परिवारों को कीट अर्पण करने के साथ जीवदया-अनुकंपा के भारत भर में 90 छोटे-बड़े कार्य किये जा रहे है। सर्वाधिक संयम जीवनवाले ऊर्जाप्रदाता आपश्री 5 वें आचार्य है। सूरत के श्री रतनलाल पानाभाई मद्रासी की गच्छाधिपति श्री माणिक्यसागर सूरीजी के वरद हस्ते सूरत में आगमोद्धारकश्री की मूर्ति प्रतिष्ठा दिनांक 9 फरवरी 1951 को शुक्रवार के दिन हुई थी उसी दिन आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। आपको पूज्यपाद मालव देशोद्धारक श्री चंद्रसागरसूरीजी की देशना पुन वैराग्य उत्पन्न हुआ था और पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री देवेन्द्रसागर सूरीजी महाराजा के शिष्य घोषित किया गया था।

तपागच्छ अधिष्ठायक देव श्री माणि भद्रवीर का जन्मोत्सव पर शिवपुर में आयोजन

✻ आचार्यश्री वीररत्नसूरीजी का जन्म महोत्सव राऊ में मनेगा।

✻ शाजापुर अंजन प्रतिष्ठा आयोजन।

शिवपुर- श्री शिवपुर मातमोर में जिन शासन अधिष्ठायक देव श्री माणि भद्रवीर जी का जन्मोत्सव 26 जनवरी वसंत पंचमी पर मनाया गया। पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा., आचार्यश्री विजय पद्मभूषण सूरीजी म.सा. आदि ठाणा-10 की अमृत निश्रा में यहां इस मंगल प्रसंग पर श्री माणिभद्रवीर का महापूजन तथा हवन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री दीपककुमार जयेश भाई का दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया गया। दिनांक 22 फरवरी को पूज्य आचार्य भगवंत श्री वीररत्नसूरीजी का जन्मोत्सव का आयोजन राऊ जैन श्री संघ में त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ मनाया जायेगा इसके बाद शाजापुर में श्री सिद्धाचल वीर मणितीर्थ धाम में 25 फरवरी से 1 मार्च तक अंजन प्रतिष्ठा का आयोजन होगा।

दक्षिण नाकोड़ा तीर्थ में मेला लगा

अस्सीकेरे- दक्षिण नाकोड़ा तीर्थ श्री संकट मोचन पार्श्वभैरवधाम में पौष दशमी का मेला दिनांक 6 जनवरी को आयोजित किया गया। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन-प्रेरणा से आयोजित कार्यक्रम में पार्श्व भैरव महा पूजन, भैरवजी के छप्पन भोग, 108 श्रीफल, पुष्प अर्पण तेल चढ़ाना और 108 दीप से आरती उतारी गई। साकरिया परिवार, बैंगलौर ने लाभ लिया।

मेडला सिटी में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव

मेडलासिटी- श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन जिनालय का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 19 जनवरी तक भव्य रुप से परमात्मा के पंच कल्याणक के साथ मनाया गया। पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयानंद सूरीजी म.सा. आदि ठाणा-5 की निश्रा में आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव में 17 जनवरी को परमात्मा के 18 अभिषेक हुए। दिनांक 18 जनवरी को प्रभु की प्रतिष्ठा ॐ पुण्याहं पुण्याई प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् के मंगल उद्घोष के साथ प्रातःकाल शुभवेला में सम्पन्न हुई। दिनांक 19 जनवरी को द्वारोद्घाटन एवं सत्तर भेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

पूज्य साध्वी प्रशांतरसा श्रीजी का 100 ओली पारणा सम्पन्न

बोरसद- पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री विज्ञानप्रभ सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में पूज्य साध्वीवर्या श्री प्रशांतरसा श्रीजी म.सा. को 100 वीं ओलीजी का पारणा महोत्सव सम्पन्न हुआ। दिनांक 9 से 13 जनवरी तक आयोजित आयंबिल ओली तपोत्सव मे पंचकल्याणक पूजन नव्वाणु पूजन, सत्तरभेदी पूजन, श्री सिद्धचक्र महापूजन का आयोजन किया गया। दिनांक 13 जनवरी को पूज्य तपस्वी साध्वीवर्या का पारणा सम्पन्न हुआ।

✻ आत्मरुचि जैसे-जैसे बढ़ती जाएगी, सांसारिक रुचि वैसे-वैसे घटती जाएगी।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासों के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उसको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर
आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९१ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

अयोध्यापुरम् में प्रसन्नता से विराग की यात्रा का अंतिम पड़ाव आचार्य पद से मिलेगा

* दो आचार्य पदवी का कार्यक्रम 8 से 12 फरवरी तक।
* सवा करोड़ आचार्य पद के जाप होंगे।
* बंधु बेलड़ी की अमृत निश्रा।

अयोध्यपुरम्- सागर समुदाय की दर्शन की महत्ता को दर्शाता जैन जगत में ख्यातिनाम श्री अयोध्यापुरम् महातीर्थ में संस्थापक बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत पूज्यपाद जिनचंद्रसागरसूरीश्वरजी एवं पूज्यपाद श्री हेमचंद्रसागरसूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में आपश्री के गुरुकुल में दो आचार्य पदवी का संयोग जिन शासन और सागर समुदाय के मान,गौरव बढ़ाने जा रहा है। दिनांक 8 से 12फरवरी तक पूज्य पंन्यास प्रवर श्री प्रसन्नचंदसागरजी एवं पंन्यास प्रवर श्री विरागचंद्रसागरजी म.सा. को नवकार महामंत्र के तीसरे पर पर विराजित किया जायेगा। पद प्रदान महोत्सव में बड़ी संख्या में गुरु भगवंत साधु-साध्वीजी का सानिध्य प्राप्त होगा। इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यश्री नयचंद्रसागर सूरीजी म.सा. एवं पूज्य आचार्य श्री लब्धिचंद्रसागर सूरीजी म. सा.के साथ मुनि श्री कैलाशचंद्रसागरजी म.सा. गणिवर्य श्री सम्यकचंद्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं पद के सवा करोड़ जाप भी होंगे। पंच दिवसीय महोत्सव में परमात्मा के 18 अभिषेक, भव्य रथयात्रा एवं शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन भी होगा। महोत्सव की योजना पूर्ण हो गई है।

अभ्युदयपुरम् में प्रतिष्ठाचार्य नरदेव-सागर सूरीजी की अमृत निश्रा रहेगी

उज्जैनउज्जैन-पूज्यपाद अभ्युदय सागर जी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर जी म.सा. ,पू.पंन्यास श्री अचलमुक्ति सागर जी म. सा., मुनिश्री पावनमुक्ति सागर जी, मुनिश्री मन मुक्ति सागरजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में अभ्युदयपुरम् की प्रतिष्ठा महोत्सव का आगाज 14 जनवरी मकर संक्राति के साथ विविध पूजन कुंभ दीप स्थापना के साथ आरंभ हुआ। महोत्सव में प्रतिष्ठाचार्य सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेव सागरसूरीजी महाराजा एवं 97 ओली आराधक मुनिश्री पद्मकीर्ति सागरजी म.सा. का आगमन हुआ है।मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. को 97 ओली पारणा प्रसंग लीमंड़ी में हुआ। 20 जनवरी को सामूहिक आयंबिल संघ में हुए एवं 21 जनवरी को आपका पारणा सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठा और पूज्य पंन्यास अचलमुक्तिसागरजी म.सा. की आचार्य पदवी भी आपके करकमलों से सम्पन्न हुई। सभी गुरु भगवंतों, साधु-साध्वी भगवंतों का मंगल प्रवेश 29 जनवरी को हुआ। महोत्सव में श्री ऋषिमंडल, भक्तामर, श्री गौतम स्वामी ,श्री सिद्धचक्र महापूजन के साथ परमात्मा के पंच कल्याणक की मंचीय प्रस्तुति भी जोरदार रही। 3 फरवरी को भव्य रथयात्रा के बाद आचार्य पदवी सम्पन्न हुई। यहां लगभग 70-75 जिन बिम्बों के साथ नवग्रह मंदिर, 45 जिनालय का निर्माण हुआ है। 4 फरवरी को ॐ पुण्याई पुण्याई प्रियंताम् प्रियंताम् के उद्घोष के साथ प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। अगले दिन द्वारोद्घाटन और सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

बंधु त्रिपुटी मुनि भगवंत में छ:रि पालित यात्रा संघ

पालीताना- पालीताना- सागर समुदाय के बंधु त्रिपुटी मुनि भगवंत श्री आगम-प्रशम-व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा गोवा से विहार करते हुए महाराष्ट्र से प्रसार कर गुजरात पहुंचे। अंकलेश्वर संघ ने आपकी अगवानी की, यहां से आपका विहार श्री शत्रुंजय महातीर्थ की ओर हुआ। यहां आपकी निश्रा में छःरि पालित यात्रा संघ मुछाला महावीर सोश्यल ग्रुप धाणेराव के द्वारा का आयोजन 15 फरवरी से 18 फरवरी 2023 तक होगा। संघ माल 19 फरवरी 2023 को होगी।साथ ही आगे के जिनशासन प्रभावना के आयोजन तथा चातुर्मास के बारे में निर्णय लिया जायेगा।

साध्वीश्री सौम्यवंदना श्रीजी का चातुर्मास

उज्जैन- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की संभावना है। इस संदर्भ में दिनांक 26 जनवरी 2023 को रिंगनोद में होनेवाले दीक्षा महोत्सव में पूज्य ओली आराधक आचार्य श्री चंद्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में घोषणा हुई

भोपावर-तृतीय ध्वजारोहण वर्षगांठ एवं महामांगलिक का आयोजन

भोपावर- 87000 हजार वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु का महातीर्थ अब विश्व ख्याति प्राप्त कर चुका है। दो वर्ष पूर्व फाल्गुन सुदी-3 को भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ था। मोन्टेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा के नेतृत्व में यादगार महोत्सव का आयोजन आज भी धर्मिष्ठों को याद आता है। महातीर्थ का तृतीय ध्वजा रोहण महोत्सव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की पावन निश्रा में फागुन सुदी-2 दिनांक 21फरवरी को पूज्यश्री महा मांगलिक एवं फागुन सुदी-3 दिनांक 22 फरवरी को श्री शांतिनाथ प्रभु के भव्य जिनालय एवं गुरु मंदिर पर ध्वजारोहण सम्पन्न होगा।सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई जायेगी। चैन्नई निवासी श्री तेजराज कोठारी परिवार ध्वजा के लाभार्थी है। इस अवसर पर पूज्यपाद गुरुदेवश्री के मंदिर पर भी ध्वजा चढ़ाई जावेगी। श्री रमणभाई, श्री हितेशभाई आदि के साथ अनेक विशिष्ट अतिथियों का आगमन होगा।

द्वारिका में नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा आचार्य पद महोत्सव

मुंबई- द्वारिका में पूज्य आचार्य भगवंत श्री ललितशेखर, श्री मनमोहन श्री रविशेखर,श्री हेमप्रभ,श्री धर्मशेखर श्री जयधर्म सूरीश्वरजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में श्री नेमिजिन तीर्थ की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ आचार्य पद प्रदान एवं दीक्षा महोत्सव का भव्य आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 19 से 24 फरवरी 2023 तक आयोजित महोत्सव में बावन जिनालय प्रतिष्ठा होगी और पंन्यास श्री हर्षशेखर विजयजी म.सा. का आचार्य पद प्रदान किया जायेगा इसके लिये एक स्पेशल ट्रेन से धर्मिष्ठ लाभार्थी भीवड़ी से द्वारिका पहुंचेंगे।

गज मंदिर दादावाड़ी में 12 वां ध्वजारोहण

उदयपुर-श्री केशरियाजी महातीर्थ में स्थित गज मंदिर एवं जिन कुशल दादावाड़ी का 12 वां ध्वजारोहण प्रसंग पर दो दिवसीय महोत्सव का आयोजन 31 जनवरी एवं 1 फरवरी को किया गया। इस अवसर पर 18 अभिषेक का आयोजन किया गया साथ ही भव्य रथयात्रा भी निकाली गई। दिनांक 1 फरवरी को विजय मुर्हूत में ध्वजारोहण लाभार्थी परिवार ने किया। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

गिरनारजी में 108 नव्वांणु यात्रा होगी

चैन्नई- श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री गिरनार महातीर्थ में 108 नव्वांणु यात्रा का भव्य आयोजन होने जा रहा है। अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यात्रा का आरंभ दिनांक 22फरवरी 2023 को होगा। संघमाल 26 मार्च को होगी।

मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी का हिमालय की ओर प्रयाण

उज्जैन- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्धरत्नसागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्नसागरजी म.सा. ने हिमालय की ओर प्रयाण किया है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्र का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहनेवाले मुनिश्री का विहार झांसी से लखनऊ होते हुए चल रहा है।

श्री गिरनार महातीर्थ का संघ

रावणगिरी- पंकुबहन परमार परिवार के द्वारा प्राचीन वंथली तीर्थ से श्री गिरनार महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन दिनांक 11 से 14 फरवरी तक किया जा रहा है। संघ पूज्य जैनाचार्यश्री रश्मिरत्नसूरीजी म.सा., आचार्यश्री संयमरत्नसूरीजी म.सा., आचार्य श्री हेमवल्लभ सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में निकलेगा।

गच्छाधिपति आचार्य श्री जयानंदसूरिजी की निश्रा में आगामीआयोजन

✻ मुंबई महानगर में चार्तुमास।

✻ 4 से 6 फरवरी को अहमदाबाद पालड़ी में थराद निवासी देसाई भीखा मल गगलदास के गृह मंदिर की प्रतिष्ठा आपके वरद् हस्तों से सम्पन्न होगी।

✻ अहमदाबाद शाहीबाग में 7 से 9 फरवरी को धानसा निवासी महावीर कुमार की दीक्षा

✻ आपश्री का मुनि मंडल सह आगे मुंबई की ओर विहार होगा।

वागड़ नरेशाचार्यश्री की निश्रा में सैलाना के प्रकाशजी मेहता का संघ नववर्ष में आयोजित हुआ

✻ आगामी चार्तुमास कांदिवली मुंबई में होगा।
✻ 5 छ:रिपालित संघ के आयोजन आपकी निश्रा में।

पालीताना- पालीताना- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य वागड़ विभूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागर सूरीजी म.सा. मुनिश्री मुनिरत्न सागर जी मुनिश्री नमिरत्न सागर जी म.सा., श्री गंभीररत्न सागर जी म.सा., श्री पद्मरत्नसागरजी म.सा. आदि की निश्रा में उपधान तप की माल का आयोजन दिसंबर में सम्पन्न हुआ। आपकी निश्रा में श्री महेन्द्रपुरम् तीर्थ श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छःरिपालित यात्रा संघ चन्द्रकांत प्रेमिला बहन कपिल सेठ परिवार के द्वारा आयोजित किया गया माल दादा के दरबार में दिनांक 30 दिसंबर को हुई। दूसरा संघ 6 जनवरी 2023 से सोनगढ़ से पालीताना छःरि पालित संघ तीसरा छःरि पालित संघ सोनगढ़ से **श्री सिद्धाचल का श्री प्रकाश चंद्रजी राजमलजी मेहता परिवार, सैलाना वाले के द्वारा दिनांक 27 से 30 जनवरी 2023 तक आयोजित किया गया।** संघ में अनेक साधु - साध्वी का भी सानिध्य रहेगा।

वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागरसूरीजी पालीताना से गिरनार तीर्थ की यात्रा

✻ आयंबिल आराधक जैनाचार्य श्रीचंद्ररत्नसागरजी दीक्षा प्रदान करेंगे।
✻ आगामी चार्तुमास पूना निश्चित हुआ।

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्न सागरसूरीजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्नसागरजी, मुनि श्री गोयम सागर जी म.सा. आदि ठाणा की पालीताना में उपधान और नव्वाणु यात्रा के बाद अति व्यस्त शासन प्रभावक धार्मिक आयोजनों की श्रृंखला है। पूज्य जैनाचार्य आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी रिंगनोद में मुमुक्षु श्राविका के दीक्षा महोत्सव में 27 जनवरी को निश्रा प्रदान करेंगे। वाणी के जादूगर श्री जितरत्नसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का विहार उज्जैन के स्थान पर पालीताना से श्री गिरनार तीर्थ की ओर हुआ है, तीर्थयात्रा सम्पन्न करवाकर आप पुनः पालीताना पधारेंगे, यहां 6 अप्रेल से आपकी निश्रा में छः रि पालित संघ यात्रा का आयोजन होनेवाला है, पालीताना से इसके बाद आपश्री सूरत में दिनांक 16 मार्च को पूज्य साध्वीवर्या श्री सम्यरत्ना श्रीजी के 100 ओली पारणा तपोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे। यहां से आपश्री आदि ठाणा का विहार पूना की ओर होगा। यहां आप चार्तुमास करेंगे, पूर्व में आपका चार्तुमास नागपुर निश्चित हुआ था किन्तु पूना गच्छाधिपति के 85 वें संयम जीवन पूर्ण होने पर आयोजित संयोमोत्सव में निश्रा प्रदान करेंगे।

पू.अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न- विजयजीम.सा. के कार्यक्रम

✻ 20 से 22 फरवरी : पूज्य आचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. का 71 वां भव्य जन्मदिन महोत्सव- श्री जैन श्वे.राऊमें 22 फरवरी को।

✻ 1 मार्च : श्री सिद्धाचल वीरमणि तीर्थधाम शाजापुर, श्री आदिनाथ प्रभु की अंजनशलाका प्रतिष्ठा।

✻ 29 मार्च से 6 अप्रेल तक : 400 तपस्वी साधकों के साथ चैत्रमास की विशाल नवपद ओली आराधना श्री ऋषभदेव छगनीराम जैन श्वे. पेढ़ी, खाराकुआ उज्जैन में।

आचार्यश्री महासेनसूरीजी म. सा. का चार्तुमास बेंगलोर में

प.पू. दादा गुरुदेव आ.श्री लब्धि सूरीजी म. के पूज्य शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेन सूरीजी ठाणा-4 का **वि.सं. 2079 का चार्तुमास विनंति अनेक संघों की, इसमें अक्की पेठ बेंगलोर श्री वासुपूज्य संघ की जय बुलाई गई।**

कोठारी परिवार का छ:रिपालित यात्रा संघ

झीलवाड़ा- पूज्य आचार्य भगवंत श्री विजय रविशेखर एवं श्री विजय ललित शेखर सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा में श्री नेमीनाथ प्रभु के महातीर्थ गिरनार से दादा श्री आदिनाथ प्रभु के महातीर्थ श्री सिद्धाचल का छ:रिपालित संघ कोठारी परिवार के द्वारा आयोजित होने जा रहा है। संघ आयोजन 29 जनवरी से 11 फरवरी 2023 तक होगा। संघ माल 12 फरवरी 2023 को होगी

वीररत्न विजयजी को सूरी पद अर्पण किया गया

उज्जैन- पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. को आचार्य पदवी प्रदान की उद्घोषणा के बाद आपके आचार्य बनने का भक्तों को बरसों से इंतजार था । जैन जगत के 24 तीर्थंकरों ने प्रति स्वरुप 24 साधु साध्वी भगवंत की उपस्थिति में यह घोषणा हुई थी । पूज्य अनुयोगाचार्य वीररत्न विजयजी को आचार्य पदवी की आज्ञा पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी ने प्रदान की । यह आज्ञा प्रदान करते हुए गच्छाधिपति ने कहा कि- प्रेम भुवनभानु सूरी समुदाय के 700 साधु-साध्वीजी के विशाल साम्राज्य में वीररत्न विजयजी का चौथा स्थान है। संपूर्ण मालवा क्षेत्र में विचरण करके आपने 280 से अधिक जिन मंदिर, उपाश्रय एवं आराधना स्थल का निर्माण करके मालवा को भारतभर में सुप्रसिद्ध बना दिया है। आचार्य पद प्रदान महोत्सव शिवपुर मातमोर मणिभद्र तीर्थ में 1 से 5 फरवरी तक आयोजित हुआ। पदवी 5 फरवरी को दी गई।

उज्जैन में चैत्रमास ओली अनुयोगाचार्यश्री और गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी की निश्रा में होगी

✻ 29 मार्च से 6 अप्रेल तक आयोजन में 400 आराधक भाग लेंगे।
✻ गणिवर्य श्री की निश्रा में दीक्षा भी होगी।

उज्जैन- आगामी वर्ष के चैत्र माह में नवकार ओलीजी की आराधना अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी म.सा. जो 5 फरवरी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने जा रहे है । आपकी ओर गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में होने जा रही है । ओली आराधना 29 मार्च से 6 अप्रेल तक श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी खाराकुआ में होगी । आराधना में लगभग 400 आराधकों के भाग लेने की संभावना है । ओलीजी की तैयारी आरंभ हो गई है। भाग लेने वाले आराधक 90090 26932 पर सम्पर्क कर फार्म भरें, फार्म भरनेवाले को ही प्रवेश दिया जायेगा।

आचार्यश्री रत्नचंद्र सूरीजी का चार्तुमास नवसारी में

नवसारी- दक्षिण गुजरात की डायमंड नगरी नवसारी नगर की पावन धरा पर श्री महावीर नगर जैन श्री संघ एवं श्री चिंतामणी जैन श्री संघ नवसारी के तत्वावधान में वर्ष 2023 व विक्रम संवत् 2079 का चार्तुमास परम गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेला वाला) के शिष्यरत्न परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नचंद्र सूरीश्वरजी म. सा., परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय उदयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का होगा।

श्री शीतलनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक मनाया

उज्जैन- यहां स्थित दौलतगंज के कांच मंदिर के मूलनायक प्रभु श्री शीतलनाथ दादा का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक मनाया गया। भव्य स्नात्र पूजन के बाद दिनांक 19 जनवरी को पंच कल्याणक पूजन पढ़ाई गई । परमात्मा की भव्य आंगी का लाभ डॉ. सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' ने लिया। साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म. सा. और साध्वी स्वर्णज्योति श्रीजी म.सा. की निश्रा रही।

पंचान्हिका महोत्सव मनाया

उज्जैन- पूज्य साध्वी श्रीकुसुम श्रीजी म.सा. की 5 वीं पुण्य तिथि तथा साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी के 45 वें दीक्षा तथा बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी की चौथी दीक्षा तिथि निमित्त पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन 18 से 22 जनवरी तक मनाया गया । साध्वीश्री चन्द्ररत्ना श्रीजी, साध्वी श्री स्वर्ण ज्योतिश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित महोत्सव में स्नात्र पूजा, मेरु तेरस के उपवास आयोजन के साथ श्री आदिनाथ एवं पंच कल्याणकपूजन, सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया। दिनांक 22 जनवरी को भव्य स्नात्र पूजन पढ़ाई गई।

श्री मिथिला तीर्थ में ध्वजारोहण

मिथिला-तीर्थ का जीर्णोद्धार होने के बाद तीर्थ की 3-4 ध्वजारोहण का महोत्सव दिनांक 28 जनवरी को आयोजित किया गया। प्रातः स्नात्र पूजन के बाद विजय मुर्हूत में ध्वजारोहण तथा सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

सागर की आन मालवा की शान पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी का सिद्धाचल में देवलोकगमन

✻ 9 जनवरी को दोपहर 3.45 पर देह छोड़ी।
✻ 10 जनवरी को अग्नि संस्कार हुआ।
✻ मालवा में जैन धर्म को आगे बढ़ाने में बड़ा योगदान रहा।

पालीताना- गरिमामय व्यक्ति की धनी उच्च कोटि का संयम चारित्र जीवन जीनेवाली सागर की आन और मालवा की शान वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. का सिद्धक्षेत्र श्री शत्रुंजय पालीताना में 9 जनवरी को दोपहर 3.45 बजे देवलोक गमन हो गया। अंतिम समय में आपका शिष्य-प्रशिष्य परिवार साथ में ही था। आपका चार्तुमास भी जम्बुदीप परिसर में ही हुआ था। दिनांक 10 जनवरी को आपका अग्नि संस्कार की क्रिया सम्पन्न हुई। स्मरण रहे आप मालवा की धर्म नगरी राजगढ़ से थी। 64 वर्ष आपने संयम जीवन चुस्त पालन करते हुए 77 वर्ष की अवस्था में देह त्याग किया। आपके अवसान से पूरे मालवा के जैन संघों में शोक छा गया। पूज्य साध्वीश्री का वर्ष 2021 में आपका चार्तुमास उज्जैन में हुआ था।पूज्य साध्वीवर्या के जीवन चरित्र की उज्जवल आभा का परिचय मुझे अनेक वर्षो से प्राप्त होता रहा है। आपके उच्च कोटी के चारित्र धर्म की आराधना एवं जिनशासन के विपुल ज्ञान के भंडार के साथ तेजोमय ज्ञानालोक की आभा युक्त आपके सम्यक सोच, संयम, त्याग, तपस्या की हथौड़ी छैनी से तराशे भव्य आभामंडल को देखकर नतमस्तक ही हुआ जा सकता था। आपके देवलोक गमन पर आगमोद्धारक परिवार की ओर से सादर भावांजलि।

जैनाचार्य श्री रवि-ललितशेखर सूरीजी की निश्रा में उपधान की मालारोपण होगी

पालीताना- पूज्य आचार्य श्री रवि शेखर सूरीजी म.सा. एवं श्री ललित शेखर सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की अमृत निश्रा में पालीताना के मेवाड़ भवन में पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उपधान तप की की माल 19 फरवरी को होगी इसके साथ ही आपकी निश्रा में श्रीमती लक्ष्मीबाई सराफ परिवार, मुंबई के द्वारा सोनगढ़ से श्री सिद्धाचल का छःरि पालित यात्रा संघ का आयोजन 12 जनवरी से हुआ, 14 जनवरी को दादा के दरबार में प्रवेश एवं 15 जनवरी को माल हुई।

सुव्रत उदय उपधान महोत्सव

चैन्नई- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री उदयप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैन्नई में श्रावक से श्रमण बनने धर्म क्रिया आराधना का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 23 अप्रेल 2023 को है। उपधान तप की माल दिनांक 11 जून 2023 को होगी। उपधान तप के लाभार्थी संघवी सरोज बहन कोठारी परिवार है।

न्यूपनवेल में गृह मंदिर की प्रतिष्ठा

मुंबई- श्री कलापूर्ण सूरीजी समुदायवर्तीय पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचंद्रसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां न्यूपनवेल में नूतन गृह मंदिर श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। दिनांक 24 से 27 जनवरी तक हुए महोत्सव में दिनांक 25 जनवरी को परमात्मा के 18 अभिषेक का आयोजन किया गया। दिनांक 26 जनवरी को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। गृह मंदिर निर्माण के लिये भाईजी से 860000522 या 8600004142 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रतापगढ़ में अष्टान्हिका महोत्सव

प्रतापगढ़- श्री शांतिनाथ जिन मंदिर में नवनिर्मित दादावाड़ी में दादा जिन कुशलसूरीजी की एवं देवी-देवताओं की प्रतिमा प्रतिष्ठा पर अष्टान्हिका महोत्सव 20 से 27 जनवरी तक मनाया गया। खरतर-गच्छ जैनाचार्य श्री जिनपीयूषसूरीजी म.सा.आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा में आयोजित महोत्सव के अंतर्गत विविधा पूजन कुंभ दीप स्थापना,पाटला पूजन, 18 अभिषेक, दादा गुरुदेव की पूजन, भव्य रथयात्रा के आयोजन हुए। दिनांक 26 जनवरी को शुभ लग्नांश वेला में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। 27 जनवरी को सत्तरभेदी पूजन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

✻ मरने का मौका हर जिन्दगी, मुक्त होने का मौका इसी (मनुष्य भव) जिन्दगी में है।

संघ स्थविर गच्छाधिपति पूज्यपाद श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा का 85 वां संयम अनुमोदना महोत्सव चार्तुमास बाद मनेगा

*** पूना में 200 साधु साध्वी भगवंत के साथ भव्य चार्तुमास का आयोजन।**
*** सम्पूर्ण देश से विहार कर साधु-साध्वी पूना पहुंचेंगे।**
*** संघ हित चिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।**

निगड़ी- परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा के संयम जीवन के 85 वर्ष पूर्ण होने पर आगामी चार्तुमास उपरांत अति भव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा। यह आयोजन आगामी चार्तुमास की पूर्णाहुति के उपरांत लगभग अक्टूबर-नवंबर 2023 में होने के संबंध में व्यापक विचारण चल रहा है। इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में पूना में सागर समुदाय के लगभग 200 से अधिक गुरु भगवंतों, साधु-साध्वीजी का भव्य चार्तुमास होने के लिये व्यापाक तैयारियां पत्र व्यवहार आदि चल रहा है। चार्तुमास से जुड़ने के लिए भारत के चारों कोने से साधु-साध्वी भगवंतों 100 से 1000 किलोमीटर का विहार कर पूना पहुंचने के लिये तत्पर है। जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य चार्तुमास के साथ पूज्यपादश्री का 85 वां संयमोत्सव मनाने के भव्य संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है। पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़ रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी में जुड़ गये हैं।

बहु श्रुत ज्ञानी डॉ. मुनिश्री दीपरत्न सागरजी को ''श्रुत स्थविर'' पद से अलंकृत किया गया

जामनगर- जैन जगत में आगम ग्रंथों पर सर्वाधिक लेखन कार्य करने वाले और सर्वाधिक पुस्तकों की रचना करनेवाले सागर समुदाय के बहुश्रुत ज्ञानी डॉ. मुनि श्री दीपरत्नसागरजी म.सा. को पूज्यपाद स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्धन्य जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा की आज्ञा से''**श्रुत स्थविर**'' की उपाधि से अलंकृत किया गया है। संघ हित चिंतक पूज्य आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी महाराज ने पूज्यश्री की अनुमोदना करते हुए आपको सूचित किया। इस अनुमोदनीय प्रसंग पर श्री जैन देवबाग लक्ष्मी आश्रम उपाश्रय संस्था जामनगर में दिनांक 26 जनवरी को ''श्रुत स्थविर'' पद की अनुमोदना में भव्य आयोजित किया गया जिसमें जामनगर के श्री संघों के साथ अन्य स्थानों के श्रेष्ठिवर्यो की मंगल उपस्थिति रही। स्मरण रहे पूज्य डॉ. मुनिश्री दीपरत्नसागरजी की आगम ग्रंथों पर किये गये कार्यो को आगमोद्धारक में हमें प्रकाशित करते आये हैं। पूज्यश्री को पदवी मिलने पर आगमोद्धारक परिवार की ओर से हार्दिक अनुमोदना।

पू.पं. विरागसागरजी को आचार्य पदवी

मुंबई- पूज्यपाद गच्छाधिपति संघा स्थविर आचार्य भगवंत श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा की आज्ञा से आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य क्रांतिकारी संत प्रवर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। आपकी आचार्य पदवी इसी वर्ष होगी।

आचार्य विज्ञानप्रभसूरीजी म.सा निश्रा में दीक्षा

1 मार्च 2023 फाल्गुन सुदि- 10, को श्री केशर हेम प्रवज्या मंडप, भिवंडी में निवासी मुमुक्षु मनिषा कुमारी जवेरी लाल जी मुणोत की भागवती प्रवज्या।

हाड़ेचा में कीर्तिस्तंभ रुप चर्तुमुखीय जिनप्रसाद की अंजन प्रतिष्ठा दीक्षा महोत्सव सम्पन्न

हाड़ेचा- कनक कीर्तिभवनानि-नंदन महोत्सव का भव्य विशाल आयोजन 25 जनवरी को गुरु भगवंतों भव्य प्रवेश से आरम्भ होकर 4 फरवरी तक आयोजित किया गया। पूज्य जैनाचार्य श्री सोमसुन्दरसूरीजी, जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजशेखार सूरी जी म.सा., जैनाचार्य श्री योगतिलक सूरीजी म.सा. एवं जैनाचार्य श्री रत्नाकर सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों का अमृत सानिध्य रहा। श्री बाबूभाई भंसाली आदि परिवार के जोरदार योगदान से महोत्सव में 1 फरवरी को परमात्मा को अंजन की क्रिया गुरु भगवंतों ने सम्पन्न करवाई। 2 फरवरी को हाड़ेचा में यादगार भव्य रथयात्रा का आयोजन एवं 3 फरवरी को परमात्मा को भव्य प्रतिष्ठा के साथ गद्दीनशीन किया गया। 4 फरवरी को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव पूर्ण हुआ। महोत्सव में सामूहिक दीक्षा के आयोजन से चार चांद लग गये।6 मुमुक्षु की भव्य वर्षी दान संयम विजय यात्रा निकाली गई। दीक्षा 25 जनवरी को सम्पन्न हुई।

बाल मुमुक्षु श्री वीर ने प्रभुवीर का अनुगमन कर मुनिश्रीवीरभद्रसागरजी नाम पाया

निगड़ी- यहां विराजित सागर समुदाय के श्रमण परम्परा संवाहक संघवत्सल, संघ हितैषी, संघ कौशल्य धार संघ स्थिवर, परम अप्रमत्तयोगी, निर्ग्रन्थ शिरोमणी, पूज्यपाद जिनागम सेवी सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धनसागर सूरीश्वरजीं प्राचीन तीर्थोद्धारक सागर की शान पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीश्वर जी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा मे श्री वीर का दीक्षा महोत्सव विशाल धर्मसभा के साथ दिनांक 19 से 23 जनवरी तक मनाया गया।दिनांक 21 दिसंबर को 12 वर्षीय श्री वीरकुमार प्रतीकभाई विराणी को श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामीजी के श्रमण संघ से सम्मिलित होने के लिये पूज्यपाद गच्छाधिपति ने दीक्षा का मंगल मुर्हूत प्रदान किया था दीक्षा महोत्सव में आयोजित पंचान्हिका महोत्सव के अंतर्गत 19 जनवरी को भव्य रुप से ऋषभ कथा का आयोजन हुआ। 20 जनवरी को श्री रजोहरण अभिषेकम् के साथ मुमुक्षु की हल्दी रस्म हुई। 21 जनवरी को श्री ऋषिमंडल महापूजन पढ़ाई गई। दिनांक 22 जनवरी को उपधान तप के तपस्वीयों के साथ बाल मुमुक्षु की संयम विजय यात्रा के साथ भव्य वर्षीदान का आयोजन हुआ। 21 जनवरी को प्रातःकाल शुभ लग्नांश बेला में पूज्य गुरु भगवंतों के अमृत सानिध्य विशाल दीक्षा मंडप में दीक्षा क्रिया विधि आरंभ हुई। दीक्षा उपकरण की जोरदार बोली लगी। बाल मुमुक्षु श्रीवीर का नाम बालमुनिश्री वीरभद्र सागरजी म.सा. घोषित हुआ। आपने अपना जीवन सकल संघ हित चिंतक प्राचीन तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री हर्ष सागरसूरीजी को समर्पण किया है।

मुनिश्री नमीरत्न सागरजी म.सा. का देवलोकगमन हुआ

पालीताना- राजगढ़ म.प्र. निवासी मुनिश्री नमीरत्नसागरजी म.सा. ने पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा की अमृत निश्रा में दीक्षा ग्रहण की थी। आप पूज्य आचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरी जी म.सा. के सुशिष्य रहे। गत चार्तुमास आचार्यश्री के साथ पालीताना में ही किया था। विगत दो माह से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। अंतिम समय में आपका स्वास्थ्य और खाराब हो जाने से अस्पताल में भर्ती किया गया था। दिनांक 20 जनवरी को आपने अंतिम सांस ली। सागर समुदाय के अनेक गुरु भगवंतों की निश्रा में आपकी पालकी दोपहर 3 बजे निकाली गई। मुनिश्री के संसारी पुत्र श्री सचिन भी उपस्थितरहे। मुनिश्री को आगमोद्धारक से बहुत लगाव था। अनेक बार उनकी भेजी गई सामग्री का प्रकाशन आगमोद्धारक में हुआ था। आपको आगमोद्धारक परिवार की ओर से भावभीनी भावांजलि।

भीवड़ी में उपधान तप

भीवड़ी - ओसवाल पार्क में पूज्य आचार्य भगवंत श्री यशोरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनाने वाली आराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है। प्रथम प्रवेश दिनांक 29 नवंबर तथा द्वितीय प्रवेश दिनांक1 दिसंबर को हुवा। उपधान तप की माल 18 जनवरी 2023 को होगी।

देवांशी संघवी के जीवन का अद्भूत सफर बाल साध्वी श्री प्रज्ञाश्रीजी तक

श्री भेरुतारकधाम तीर्थ के संस्थापक परिवार से देवांशी संघवी श्री धनेशभाई संघवी की पुत्री है। श्री धनेश भाई संघवी सूरत में हीरा व्यापारी है और 300 करोड़ से अधिक का लेनदेन है। उनके परिवार में देवांशी का जन्म शायद जिनशासन की अमानत के रुप में ही हुआ था। 8 वर्षीय देवांशी के जीवन का परिचय पाकर आप भी भाव विभोर हो जायेंगे। देवांशी की दीक्षा वेसू सूरत में 35 हजार धर्मिष्ठों की उपस्थिति में हुई। 14 जनवरी से महोत्सव आरंभ हुआ था।

आराधना:- ✻ जन्म लेते ही ओघा का दर्शन। ✻ नवकार मंत्रों का स्मरण, पू. प्रशमिताश्रीजी म.सा. से नाम सुना। ✻ जन्म हुआ उस दिन से ही परिवार ने 14 नियम धारना शुरु करवाया, प्रायः बरस तक रोज दिन में धारा कभी रात्री में। ✻ जन्म से ही भव आलोचना ली। ✻ अष्टमी का जन्म प्रभुजी की पूजा सौ प्रथम वार की। ✻ प्रायः 25 दिन की थी तब से नवकारशी शुरु की। ✻ डायपर और लिखे हुए वस्त्र कभी पहने नहीं। ✻ आठ महीने की हुई तब से रोज त्रिकाल पूजा की है मतलब सुबह की वासक्षेप पूजा धूप दीपक लघु चैत्यवंदन प्रार्थना बाद में दोपहर को अष्टप्रकारी। ✻ जन्म से ही रोज नवकार, पहला पंचसूत्र, आप स्वभाव की सज्झाय सुनी। जन्म से ही सचित वापरा नहीं (3 वर्ष तक)। जन्म से ही टीवी नहीं देखा। ✻ चार वर्ष पूरे हुए तब 4 प्रकरण, व्याकरण का एक अध्ययन दो पाठ का टीका सहित पूरा किया, पहले भाष्य आधा किया। ✻ साढ़े चार वर्ष में पू.आ.श्री कीर्तियश सू.म.साहेब के पास में पहला कर्मग्रंथ मंडाया और पूज्य सा. प्रशमिता श्रीजी म.सा. पास हृदय प्रदीप मंडाया। ✻ 5 वर्ष 6 महीने की हुई तब 5 प्रतिक्रमण, भक्तामर, 4 प्रकरण, 3 भाष्य, 4 कर्मग्रंथ पूरा किया। ✻ 6 वर्ष में वैराग्य शतक, तत्वार्थ के 2 अध्ययन (वैराग्य शतक पूज्य सा. प्रशमिताश्रीजी म.सा. के पास मंडवाया और तत्वार्थ पू.आ.श्री कीर्तियश सु.म.सा. ने मंडवाया)। ✻ 7 वर्ष की हुई तब तक 5 प्रतिक्रमण, भक्तामर, 4 प्रकरण, 3 भाष्य, 4 कर्मग्रंथ, पंच सूत्र, वैराग्य शतक, 27 भव स्तवन, पंच कल्याणक का स्तवन, हालरंडु, व्याकरण के 2-1 अध्यायन टीका सहित संथारा पोरिसी कंठस्थ किया। ✻ अर्थ सहित-संसारदावा तक के सूत्र जीव विचार, 1 कर्मग्रंथ, ज्ञानसारना 1 अष्टक अर्थ, गुणानुराग कुलकम, वैराग्य शतक के गाथा का अर्थ किया। ✻ अब तक- 5 प्रतिक्रमण, भक्तामर, 4 अध्याय, 3 टीकाएं, 4 कर्मग्रंथ, पंच सूत्र, जीव विधान अर्थ सहित), नव तत्व (अर्थ सहित), वैराग्य शातक (अर्थ सहित) तत्वार्थ, 27 भाव का स्तवन, पंच कल्याणक का स्तवन हलार्डु, ज्ञानसार 19 शास्त्र (अर्थ सहित) भाष्य सहित व्याकरण के 21/2 अध्याय, संथारा पेरिस, संस्कृत की पुस्तक 1-15 पाठ, अर्थ सहित सूत्र-पुखर वर.।

तपस्या:- ✻ पालीताना में अपना पहला उपवास 2 साल की उम्र में किया था। (शाम को तलहटी में आकर संपूर्ण वंदितु का पाठ किया।) ✻ चार साल की उम्र में चैत्रमास के ओली में, अपनी इच्छा के अनुसार आयंबिल का प्रदर्शन किया और चैत्री पूनम को उठा लिया। ✻ 5 साल 4 महीने की उम्र में चैत्री पूनम की क्रिया को खड़ेहोकर की और लगभग 125 खमासमानों को भी खड़े होकर परिक्रमा की। ✻ 7 वर्ष की आयु में उन्होंने तीन एकासन से भरे भाना करी पॉश का दशमांश एकत्र किया।

सफर:- पालीताना-2 बार, गिरनार- 1 बार, जीरावाला, दियाना, मालेगांव, तारंगाजी, सब कल्याणक भूमि (सिर्फ मथुरा बाकी) जगह की तीर्थयात्रा।

वीरती धर का भेष:- ✻ करीब डेढ़ साल की उम्र में 58 से ज्यादा दीक्षाएं देखी गई। ✻ तीन साल और छह महीने की उम्र में 119 दीक्षाएं देखी गई। ✻ पौने तीन वर्ष में पू. आ.भगवंत श्री कीर्तियश सूरीश्वरजी म.सा. के पास सौ प्रथम खुद के मुख से आलोचना ली. (तब श्री आदिनाथ प्रभु पर केसर गिरा था और साहेब ने आदिनाथ प्रभु समक्ष जा कर खड़े-खड़े तीन खमासमण देने की आलोचना दी पूरी कर आचार्य भगवंत को बताया।) ✻ तीन वर्ष और तीन महिने की हुई तब श्री नवकार मंत्र का अधिकार प्राप्त किया। ✻ श्री शिखरजी तीर्थ की तलेटी में अंजनशलाका के प्रसंग पर प्रभु का अंजन घिसा। ✻ 5 वर्ष और 8 महिने की हुई तब पर्युषण में भरसभा में 27 भव का स्तवन बोला था (एक भी भूल के

बगैर) और 17 प्रतिक्रमण किये। ✻ 6 वर्ष और 4 महिने की थी तब पहला देसावगासिक किया। ✻ 7 वर्ष की उम्र में पहला पौषध किया। ✻ दो बरस की थी तब से म.साहेब के पास जा रही है बिना कारण के एक भी दिन नहीं गई ऐसा नहीं हुआ, पहले एक घंटा जाती थी फिर धीरे-धीरे 2 से 4 घंटा बाद में सुबह से लेकर शाम तक जाती थी पिछले तीन-चार महीनों से लगातार म.साहेब के पास ही थी। ✻ अहमदाबाद से सूरत (300 कि.मी.) जितना विहार किया है, एक बार देवांशी ने एक ही दिन में सुबह और शाम मिलाकर 25 कि.मी. जितना विहार किया था। ✻ 7 वर्ष की हुई तब से जब भी मौका मिला उसने पौषध किये हैं। ✻ आज तक एक भी चीज अभक्ष नहीं खाई (किसी ने भूल से दिया हो और पता ना होने के कारण खाया हो वह अलग बात है) तीन वर्ष तक सचित नहीं खाया।

स्वाध्याय:- ✻ दो वर्ष की हुई तब नवकारशी, अब्भुठ्टिओ. तक के सूत्र, आधा सात लाख, 3 स्तुति, 8 धार्मिक कथा, 8 कर्म के नाम, नव तत्व के नाम, पांच ज्ञान के दोहे, 8 कर्म के पेटाभेद के नाम, अष्टप्रकारी पूजा के नाम सीखा। ✻ दो वर्ष और तीन महिने की हुई तब जगचिंतामणी आधा, सात लाख, पहले प्रणातिपात, कल्याण कंदं, संसार दावा, चौविहार, नवकारशी पच्चक्खाण, अष्ट प्रकारी पूजा के दोहे, ज्ञान के और प्रदक्षिणा के दोहा कंठस्थ किये। ✻ लगभग ढाई वर्ष की हुई तब दो प्रतिक्रमण, स्नातस्या, संतिकरं, मोटी शांति, आधा पंच सूत्र हुआ। ✻ तीन वर्ष और एक महिने की हुई तब पांच प्रतिक्रमण पूरा हुआ। ✻ तीन वर्ष और छः महिने की हुई तब भक्तामर और जीव विचार की 25 गाथा पूर्ण किया। ✻ तीन वर्ष और नव महिने में तीन प्रकरण, व्याकरण का पहला अध्यायन कंठस्थ किया। ✻ जब सवा चार साल की थी, तब वह अपनी मां के बिना 10 दिनों तक पालीताना में रही और उसे 37 दीक्षाएं 4 आचार्य उपाधियां, 13 वादी दीक्षाएं मिली। पालीताना के लिए जात्रा पर चल रही थी (दोपहर 1.00 बजे बोडिंग और शाम 6.30 बजे नीचे उतरे) प्रतिदिन लेक्चर और लेक्चर में बैठते थे। 200 से 250 साध्वीजी की गुरु पूजा की (एक ही दिन में)। ✻ पांच साल के अंत में 146 दीक्षाएं देखी गई। ✻ 6 साल में 278 दीक्षाएं देखी गई। ✻ अब तक देखी गई कुल दीक्षा-367, ✻ विवाह-0, ✻ होटल-0, ✻ थिएटर -0, ✻ उन्होंने पाच साल की उम्र से ही पूरे दीक्षा समारोह को याद कर लिया है।

व्यवहारिक ज्ञान:- ✻ घन में- स्वर्ण पदक जीता, ✻ संगीत में- सभी राग प्रमाण पत्र हैं। (छह वर्ष की आयु में प्राप्त हुआ।) ✻ स्केटिंग- कर सकते हैं। ✻ योग- मेहनत से सीखे गये सभी आसन स्वस्तिक भी कर सकते हैं। ✻ भरत नाट्यम में- एक वर्ष किया। ✻ मानसिक गणित किया। ✻ भाषा- संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मारवाड़ी, अंग्रेजी। (सभी भाषा समझ और बोल सकते हैं।)

धन्य माता-पिता, धन्य संघवी परिवार!

102 वर्ष प्राचीन श्री शांतिनाथ प्रभु से सुशोभित हुबली में 10 मुमुक्षुओं की "वैराग्य यात्रा"

हुबली- श्री प्रेम भुवनभानु सूरि वैराग्य वाटिका श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन मंदिर के पास जैन कालोनी, कुसुगल रोड़, हुबली कर्णाटक में **वैराग्यदायी सान्निध्य:-** ✻ उपनय सम्राट, कर्णाटक क्षेत्र प्रभावक पूज्य आचार्य श्री अजितशेखर सूरीश्वरजी महाराजा, वर्धमान तपोनिधि पूज्य आचार्य श्री विमलबोधि सूरीश्वरजी महाराजा, श्रमणीगणनायक पू.आ.श्री अभयशेखर सूरीश्वरजी म.सा.के आज्ञानुवर्तिनी पू.सा.श्री चरित्रवर्धना श्रीजी म.सा. पू.सा.श्री ज्योतिवर्धना श्रीजी म.सा. गच्छाधिपति पू.आ. श्री उदयप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्तिनी पू.सा. श्री दर्शनप्रभा श्रीजी म.सा., पू.सा. श्री मुक्तिप्रभा श्रीजी म.सा. **वैराग्य यात्रा- दीक्षा- 26-1-2023**

मुमुक्षु यशकुमार लुंकड (20), (गुंटूर-आहोर) मुमुक्षु राहुलकुमार मुथा (20), (भायंदर-विजयवाड़ा-दांतराई)मुमुक्षु दर्शनकुमार संघावी (20), (हुबली-सियाणा)मुमुक्षु विशेषकुमार चौहान (19), (चैन्नई-बरलूट) मुमुक्षु प्रीतमकुमार चौहान (14), (रत्नागिरी-थाँवला) मुमुक्षु क्रीशकुमार संघावी (13) (मैसूर-माण्डवला), मुमुक्षु ईशाकुमारी जैन (28) (हुबली-पाडिव), मुमुक्षु शीतलकुमारी मालू (27) (हुबली-बाड़मेरी), मुमुक्षु दर्शीकुमारी जैन (22) (हुबली-पाडिव), महा सुद-5 गुरुवार, दिनांक 26-1-2023 सुबह 6.30 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ हुई। मुमुक्षु भावीकुमारी सिरोहीया (20) (हुबली-चुल्ली-शिवगंज) की दीक्षा 28-1-2023 को हुई।

हमारे तीज-त्यौहार

1- माघ सुदी-14	शनिवार	14-2-2023	कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यश्री का दीक्षा दिन
2- फाल्गुन वदी-11	गुरुवार	16-2-2023	श्री ऋषभदेव प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक
3- फाल्गुन सुदी-3	बुधवार	22-2-2023	श्री विहरमानदेव आदि 20 विहरमान का दीक्षा कल्याणक
4- फाल्गुन सुदी-8	सोमवार	27-2-2023	अट्ठाई आरंभ

पंचक :

आरम्भः- फाल्गुन वदी-30, सोमवार, दिनांक 20-2-2023 समय- 01.16 बजे से

समाप्तः- फाल्गुन सुदी-5, शुक्रवार, दिनांक 24-2-2023 समय- 03.45 बजे तक

धर्म के प्रति आस्था

आज विश्व धर्म के प्रति अविश्वास और नैतिक मूल्यों के प्रति विद्रोह की भावना से सुलग रहा है। विज्ञान और औद्योगिकी की जबर्दस्ती और चमत्कारिक उपलब्धियों के बावजूद मनुष्य का मन एक गहरे शून्य से भर गया है। वह नहीं जानका कि इस शून्य को कैसे भरा जाए। चूंकि आज लोग वैज्ञानिक ढंग से सोचते हैं, इसलिए वे हर चीज की छानबीन और पूछताछ करना चाहेंगे। ऐसी स्थिति में हमें उनके सामने कुछ ऐसी बातें रखनी होगी जो उन्हें बौद्धिक और नैतिक दोनों ही दृष्टियों से आश्वस्त कर सकें। हमें भी किसी ऐसे धर्म को उनके सामने नहीं रखना है जो युक्तिमूलक न हो। हर कोई हमसे पूछता है, क्या यह युक्ति संगत धर्म है ? हर कोई धर्म के बारे में जिज्ञासा रखता है और यही वास्तव में हमारा अभीष्ट भी है। क्या धर्म का लक्ष्य तर्क और चेतना के मार्ग से प्राप्त किया जा सकता है।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

संभव-असंभव

साधना के उपक्रम में शरीर का बहुत महत्व है। जिस प्रकार सोपान पर चढ़े बिना ऊपर की मंजिल पर जाना असंभव है, उसी प्रकार शरीर को साधे बिना आत्म-साधना संभव नहीं है। तर्क हो सकता है कि लिफ्ट मिल जाए तो सोपान का क्या करना है ? सीधी छलांग भरी जा सकती है पर यह भी तो सोचने की बात है कि लिफ्ट किसे-किसे उपलब्ध होती है। वह उपलब्ध हो भी जाए और बीच में बिजली चली जाए तो त्रिशंकू बनकर रहना पड़ सकता है। अत: सभी को संभव-असंभव का बोध होना चाहिये।

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक